मार्च-२०१८ ◆ वर्ष ६ ◆ अंक १० ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

मार्च-२०१८

स्त्री यज्ञ की
ब्रह्मा हो,
नहीं उपेक्षित हो
वह कभी।
सर्वोपरि सम्मान हो उसका,
ऋषि दयानन्द ने बात कही।।

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ७५

श्रेष्ठ क्वालिटी की पहचान, एम डी एच मसाले हैं सारे भारत की शान
"एक तांगे वाला जो बना मसालों का शहंशाह"
MDH मसाले
असली मसाले सच - सच
Shahi Paneer masala
DEGGI MIRCH
Chana masala
Sabzi masala
Dal Makhani masala
Chunky Chat masala
Pav Bhaji masala
Sambhar masala
Kitchen King
Rajmah masala
Hotel Quality Lal Mirch Powder
Garam masala
Peacock Kasoori Methi
AMCHUR POWDER
JEERA POWDER
BLACK PEPPER POWDER
HALDI POWDER
LAL MIRCH POWDER
DHANIA POWDER
KASHMIRI MIRCH
White Pepper powder
Chutney Podina masala
Curry powder
Dahivada Raita masala
Pani Puri masala
T-Plus masala
JAL JEERA masala
अन्य उत्कृष्ट उपयोगी उत्पादन
Soyatein
सोयाटीन वड़ियाँ
हवन सामग्री
SUPER HING
हींग
KESAR
केसर
दंत मंजन
Assorted Spices Box
GIFT PACK
गिफ्ट पैक की कीमत सिर्फ 550/- रु०
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015, 011 - 41425106 - 07 - 08
E - mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com
ESTD. 1919

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	-1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११९
चैत्र कृष्ण पंचमी
विक्रम संवत्
२०७५
दयानन्दाब्द
१९४

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

March - 2018

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 3500 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

०९

आर्यसमाज स्थापना दिवस

२०

०४	वेद सुधा
०६	एक रास्ता एकता की ओर
०८	सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०३/१८
१२	हिन्दी
१५	शिवालिक गुरुकुल
१६	राष्ट्र निर्माण
१८	कब कैसा नववर्ष हमारा?
२२	विकास वादियों से कुछ प्रश्न
२५	हनुमान वेद के विद्वान् थे
२८	स्वास्थ्य- स्वस्थ सुखी जीवन
२९	कथा सरित- जीवन की सफलता
३०	सत्यार्थ पीयूष- ईश्वर सिद्धि

समाचार २६

हलचल २७

स्वामी — श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ६ अंक - १०

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

वेद सुधा

तीक्ष्णो राजा विषासही रक्षोहा विश्वचर्षणिः।
ओजो देवानां बलमुग्रमेतत् तं ते बध्नामि जरसे स्वस्तये।।

-अथर्व १९.३३.४

उत्तर प्रदेश में सम्पन्न २०१७ के सामान्य निर्वाचन के परिणामस्वरूप आज जिन्हें मुख्यमंत्री के पदग्रहण का शुभावसर मिला वह एक शीर्षस्थ सन्त हैं- महन्त आदित्यनाथ योगी। इस अवसर पर अथर्ववेद का उक्त मन्त्र तथा उसके भाव प्रस्तुत हैं जिसमें लोकप्रिय शासक के लिए चमत्कारी मार्गदर्शन किया गया है। देखिये:- अर्थात् राजा को संयमपूर्वक दर्भमणि अर्थात् परिमार्जन करने वाले वीर्य का रक्षण करते हुए रोगरूप कुविचारकारी शत्रुओं व राक्षसी जीवों पर विजय करना चाहिए। सब अंग-प्रत्यंगों को सुरक्षित करने वाले देव पुरुषों के ओज व तेजस्वी उग्र बल वाले पुरुषों को साथ में सम्बद्ध करते रहना चाहिए। स्वयं वृद्धावस्था तक स्वस्थ रहने एवं सम्पूर्ण प्रजाजन के लिए कल्याणकारी अभियान चलाते रहना चाहिए।

इस मंत्र की पुष्टि एक अन्य मंत्रोक्त **'ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं वि रक्षति'** (अथर्व ११.५.१७) से की गई जिसका तात्पर्य है- राजा संयमरूप तप द्वारा राष्ट्र की विविधतया रक्षा करता है। इसका भावाशय यह नहीं समझा जाना चाहिए कि हर शासक कोई साधु सन्त ही होगा प्रत्युत यह समझना चाहिए कि गृहस्थ होते हुए भी सात्विक एवं संयमित जीवन वाला होना चाहिए। यदि वह वास्तव में महात्मा है तो 'सोने में सुहागा' होने का शुभ योग होगा। एक बार ऐसा ही सुन्दर संयोग एक प्रेरक कथानक से समझते हैं।

एक राज्य ऐसा था जिसमें राजा के न रहने पर नये राजा का चुनाव विचित्र विधि से होता था। महामंत्री, कोषपति व सेनापति

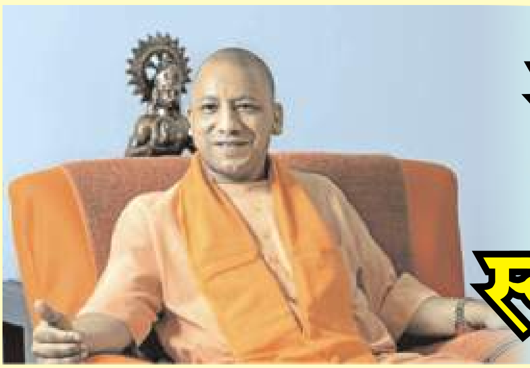

सन्त सम्राट और स्वर्ग नरक के कपाट

राजधानी के परकोटे पर बैठ जाते थे, और प्रातःकाल जो भी व्यक्ति नगर में सर्वप्रथम प्रवेश करता था उसे ही राजा बना दिया जाता था। एक समय ऐसी स्थिति में एक साधु महाराज नगर में प्रवेश करते हुए पकड़ लिए गए। उनके लाख मना करने पर भी उन्हें राज्य सिंहासन पर बैठा दिया गया और उन्हें राज्य-संविधान का इकलौता नियम बता दिया गया कि आपको निर्धारित अवधि तक राज्य सिंहासन पर रहना है आप जो चाहे वही करें। सभी कुछ आप के अधीन रहेगा। अवधि पूर्ण होने पर नगर के समीप बहने वाली काली नदी को पार करके भयंकर वन में जाना होगा, जहाँ खूँखार शेर, चीते दहाड़ते हैं अन्य भी हिंसक पशुओं की भरमार है। वहाँ पहुँचने पर वे पशु आपको अपना आखेट बना लेंगे और हाँ यह तभी संभव होगा, जब नदी में रहने वाले विशाल घड़ियालों से बचकर आप जंगल में पहुँच पायेंगे।

महात्मा ने इस नियम को सुनकर अपना अधिनियम लागू कर दिया। साधु राजा ने अपना लक्ष्य समझ लिया। उसने राज्याधिकारियों को बुलाकर पहले राज्य व्यवस्था सुचारू कर दी। उपरान्त नदी पर पुल बनवा दिया। नदी पार जंगल को व्यवस्थित कर वहाँ एक नगर, बाजार, पाठशालाएँ, चिकित्सालय एवं राजमहल भी बनवा दिया।

धर्मस्थल भी खड़े कर दिये। राज्य प्रशासन एवं प्रजाजन सभी प्रसन्न रहने लगे। राज्य की कुशलता एवं व्यस्तता में निर्धारित अवधि भी आ गई। साधु सम्राट ने नदी पार जाने के नियम का संकेत कर अपनी विदाई की बात कही तो महामंत्री, कोषपति, सेनापति एवं प्रजा शिष्टमंडल सभी ने उनसे सविनय आग्रह करके अपना अभीष्ट व्यक्त कर दिया- महाराज! जब आपने नरक का नाश और सर्वत्र स्वर्ग का विकास कर दिया है तो अब आपको हम नहीं छोड़ सकते। आप ही हमारे सर्वप्रिय सम्राट बने रहेंगे।

इसी क्रम में एक और कथानक प्रस्तुत करते हैं- एक राजा मत-मतान्तरवादी ढोंगियों के फेर में पड़कर स्वर्ग की कामना से विभिन्न प्रकार के पूजा पाठ कथाएँ करवाया करता था। वे सभी राजा से बड़ी-बड़ी धनराशियाँ, सोना, चांदी, भूमि, वैभव लेते रहते थे। उनका पुत्र राजकुमार शिक्षित व विवेकशील था और इस सबको नापसन्द करता था। वह अपने पिता से तर्क-वितर्क अवज्ञा कैसे करता। एक दिन राजकुमार अपने कुछ साथी सहयोगियों के साथ वनविहार को निकला। घंटों तक दृश्य-दर्शन व मनोरंजन चलता रहा। अचानक वह जिस घोड़े पर बैठकर यात्रा कर रहा था, वही घोड़ा पागल हो गया। पागल घोड़ा अत्यधिक तेज गति से दौड़ता फांदता घोर घने जंगल में घुस गया। वहाँ कोई मनुष्य दिखाई नहीं दे रहा था जो उसकी चीख पुकार को सुन पाता। बहुत भीतर जाने पर सुनसान स्थान पर एक झोपड़ी दिखाई दी जिसमें एक लकड़हारा रहता था जो जंगल की सूखी-सूखी लकड़ियों को एकत्रित कर उनका कोयला बनाकर बाजार में ले जाकर बेचता था और इस प्रकार अपने परिवार का निर्वाह करता था।

उसने राजकुमार की 'बचाओ-बचाओ' की गुहार सुनी तथा घोड़े के पागलपन का आभास किया तथा मार्ग में एक बहुत बड़ा लक्कड़ डाल दिया जिसकी ठोकर खाकर घोड़ा व राजकुमार दोनों ही गिर गए, चोट तो लगी किन्तु जान बच गई। कुछ देर बाद वहाँ राजकुमार के सहयात्री भी आये और उसे राजधानी वापस ले आये। स्वस्थ होने पर सम्राट ने उस लकड़हारे को बुलाकर सम्मानित किया और उसे चन्दन का एक बड़ा बाग पुरस्कार में दे दिया।

वर्षों बाद राजकुमार के राज्याभिषेक के महोत्सव पर राजा स्वयं उस उद्यानपति बन गये लकड़हारे को निमंत्रित करने गया। वह सोच रहा था कि वह उद्यानपति महाधनपति बनकर सुविधा सम्पन्न भवन वैभव में सपरिवार आनन्दमग्न होगा। पर वहाँ पहुँचने पर पता चला कि वह चन्दन बाग उजड़ चुका है लकड़हारे ने उसे काट-काट कर कोयला बनाकर बेच दिया है। चन्दन की लकड़ी के छोटे टुकड़े का बाजार में सैंकड़ों रुपया मिलने का उसे प्रत्यक्ष आभास कराया, तब लकड़हारा अपने हाथ मलता रह गया। सीख यह मिली कि मानव योनि रूपी इस चन्दन बगिया को हम भी काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, घृणा, द्वेषरूपी कोयले बनाकर नष्ट कर देने के कुकृत्य से बचें। राजकुमार के पिता जहाँ धर्माडम्बर के प्रति दुराग्रही थे वहाँ सिंहासनरूढ़ हुए यह नये राजा धर्मानुष्ठान के प्रति द्रोही होकर अहंकारी हो गए थे। एक सन्त ने आकर राजधानी में डेरा डाला अपार भीड़, राज्याधिकारी, मंत्री सभी उनके उपदेश-श्रवण को गए। राजा मंत्री के आग्रह पर भी नहीं आया, किन्तु अपनी जिज्ञासा शान्त करने हेतु अंधेरे में उनके पास चला गया। ध्यानमग्न सन्त ने राजा द्वारा यह कहते हुए कि मैं राजा हूँ, इस भूमि का मैं मालिक हूँ और आप मुझसे बोलते नहीं। मैं आपकी गर्दन काट सकता हूँ। अब सन्त के मुख से जो शब्द निकले उनसे राजा की आँखें खुल गईं। सन्त ने कहा कि 'यह अहंकार ही नरक का द्वार है।' तभी राजा ने क्षमा माँगते हुए सन्त के चरण पकड़ लिए। सन्त बोले- 'यह सत्य समर्पण ही स्वर्ग का द्वार है।' देव दयानन्द के मन्तव्य के अनुसार 'स्वर्ग' नाम सुख विशेष भोग और उसकी सामग्री की प्राप्ति का है। और 'नरक' जो दुःख विशेष भोग और उसकी सामग्री का प्राप्त होना है। इसी को लक्ष्य कर स्वर्ग के द्वार खोलना व नरक का द्वार बंद करना राजा प्रजा का पारस्परिक योजना अभियान व कर्तव्य होना चाहिए।

- देवनारायण भारद्वाज, प्रधान सम्पादक 'वयस्वी, वरेण्यम अवन्तिका प्रथम, रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश)

आत्म निवेदन

एक रास्ता एकता की ओर

नवम्बर १७ में एक अभूतपूर्व घटना घटी। निश्चित तौर पर यह स्वतन्त्र भारत में सहृदयता की सरिता प्रवाहित होने के शुभ संकेत हैं। इस स्तर तक सोच का पहुँचना भी अपने आप में संतोष ही नहीं उल्लास का विषय है। वस्तुतः अंग्रेजों ने जिस साम्प्रदायिक भावना की नींव रखी, जिन्ना ने उस पर महल बना दिया और देश विभाजित हो गया। उसके बाद वोट बेंक को साधने के लिए तुष्टीकरण की जिस राजनीति का पोषण हुआ उसने दो मुख्य सम्प्रदायों के बीच में खाई और गहरी कर दी। हर छोटे बड़े मसले को बजाय सहानुभूति और विचारपूर्वक सुलझाने के तलवार हाथ में लेकर सुलझाने का रिवाज हो गया और मसले सदैव के लिए मसले ही बने रहे जिनका समय-समय पर राजनीतिक दलों ने भरपूर लाभ उठाया। श्री राम जन्म भूमि भी ऐसे ही मसलों में एक है। सभी जानते हैं कि यह मात्र १५०० गज जमीन का मसला नहीं है एक तथाकथित मस्जिद जो मुगल आक्रान्ताओं में से एक बाबर ने कभी श्रीराम मंदिर को तोड़ कर निर्मित करायी थी उसके स्थान पर पुनः राम मंदिर बनाने हेतु देश के हर हिन्दू की भावना का प्रश्न है। यह पुरातात्विक उत्खनन से सिद्ध हो गया है कि जिस जगह ढांचा था और अभी रामलला विराजमान हैं वहाँ कभी एक भव्य मंदिर था। वस्तुतः स्थिति को निश्चित तौर पर सदैव के लिए सुनिश्चित करने हेतु इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने जन्मभूमि के स्थान के नीचे राडार तरंगों से फोटोग्राफी कराई। फोटोग्राफी करने वाले (कनाडा के) विशेषज्ञों ने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि जमीन के नीचे दूर-दूर तक भवन के अवशेष उपलब्ध हैं। इन्हें देखने के लिए वैज्ञानिक उत्खनन किया जाना चाहिए।

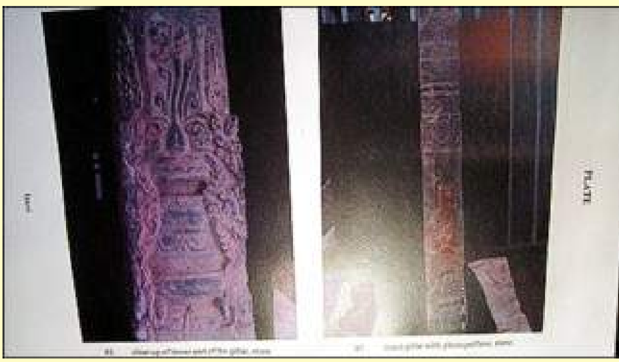

कनाडा के भू-वैज्ञानिक की सलाह पर उच्च न्यायालय ने भारत सरकार के पुरातत्व विभाग को उत्खनन का निर्देश दिया था। वर्ष २००३ में ६ महीने तक उत्खनन हुआ। ऐसी अनेक दीवारें मिलीं, जिनमें नक्काशीदार पत्थर लगे हैं, ५२ ऐसी रचनाएँ मिलीं जिनके खम्भों को जमीन के नीचे का आधार कहा गया, भिन्न-भिन्न स्तर पर ४ फर्श मिले, पानी की पक्की बावड़ी व उसमें उतरने के लिए अच्छी सुन्दर सीढ़ियाँ मिलीं, एक छोटे से मन्दिर की रचना मिली जिसे पुरातत्ववेत्ताओं ने १२वीं शताब्दी का हिन्दू मन्दिर लिखा। पुरातत्ववेत्ताओं ने अपनी रिपोर्ट में यह लिखा कि उत्खनन में जो-जो वस्तुएँ मिली हैं, वे सभी उत्तर भारतीय शैली के हिन्दू मन्दिर की वस्तुएँ हैं। अतः इस स्थान पर कभी एक मन्दिर था।

पुरातत्व विभाग की इस रिपोर्ट के आधार पर ही इलाहाबाद उच्च न्यायालय के तीन न्यायाधीशों की पीठ ने १५ वर्षों की सघन वैधानिक कार्यवाही के पश्चात् अपने निर्णय में लिखा- विवादित स्थल ही भगवान राम का जन्मस्थान है। यह स्पष्ट है कि माननीय उच्च न्यायालय के द्वारा विवादित स्थल को भगवान राम का जन्म स्थान मानते हुए पुरातत्व विभाग की रिपोर्ट के अनुसार वहाँ एक प्राचीन हिन्दू मंदिर के अस्तित्व को भी स्वीकार किया। परन्तु न जाने क्यों दो न्यायाधीशों ने विवादित स्थल

को रामलला विराजमान, निर्मोही अखाड़ा तथा सुन्नी वक्फ बोर्ड के बीच तीन बराबर भागों में बाँट दिया जब कि इन तीनों से किसी भी पक्ष ने भूमि पर स्वामित्व का दावा ही नहीं किया था। इसीलिए अभी मामला माननीय उच्चतम न्यायालय में लंबित है और उसपर सुनवायी चल रही है। {कुछ लोग इसे भूमि-विवाद ही मानते हैं।}

इस मध्य शिया सेन्ट्रल वक्फ बोर्ड का यह कहना है कि यद्यपि बाबर सुन्नी मुसलमान था परन्तु मस्जिद का निर्माता मीर बांकी शिया था उसने अपने पैसों से मस्जिद का निर्माण कराया तथा १९४६ तक इसके मुतवल्ली भी शिया ही थे और हर तरह से यह शिया मस्जिद ही थी। सुन्नी वक्फ बोर्ड ने अपने संपत्ति रजिस्टर में अवैध तरीके से इस स्थल का इन्द्राज कर लिया था ऐसा शिया सेन्ट्रल वक्फ बोर्ड का कहना है। परन्तु यह भी है कि ट्रायल कोर्ट ने इसे सुन्नी वक्फ बोर्ड की संपत्ति मान लिया था। एक बड़ी घटना के रूप में उच्चतम न्यायालय में इस मामले की सुनवाई से ठीक पहले शिया सेन्ट्रल वक्फ बोर्ड ने उच्चतम न्यायालय में याचिका लगाकर विवाद में पक्षकार होने का दावा किया और ७० वर्ष बाद ३० मार्च १९४६ के ट्रायल कोर्ट के फैसले को चुनौती दी जिसमें मस्जिद को सुन्नी वक्फ बोर्ड की सम्पत्ति घोषित कर दिया गया था। ट्रायल कोर्ट के निष्कर्षों को चुनौती देते हुए बोर्ड ने कहा कि मस्जिद में ऐसे शिलालेख मौजूद हैं, जिनपर विस्तार से यह बताया गया है कि 'बांकी' ही इस मस्जिद के निर्माता थे और कोर्ट ने उसके दावे को खारिज करके गंभीर गलती की है। शिया वक्फ बोर्ड ने रामजन्मभूमि विवाद के समझौते के लिए आवेदन करते हुए सुप्रीम कोर्ट में दाखिल सुलहनामे में कहा है कि सुन्नी वक्फ बोर्ड का दावा गलत है। तोड़ी गई इमारत शिया मस्जिद थी। हम देश के अमन चैन को ज्यादा अहम् मानते हैं तथा अयोध्या में विवादों में रही पूरी जमीन हिंदुओं को सौंपना चाहते हैं। इसके बदले अयोध्या में किसी मस्जिद का निर्माण भी नहीं करना चाहते। मस्जिद का निर्माण लखनऊ शहर में किया जायेगा वह भी बाबरी मस्जिद के नाम से नहीं बल्कि मस्जिदे-अमन के नाम से। इसके लिए भूमि की मांग राज्य सरकार से की है।

समझौता पत्र की कॉपी भी कोर्ट में जमा की गई है। इसमें इन सभी हिन्दू पक्षकारों के हस्ताक्षर हैं। शिया वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष वसीम रिजवी तथा अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद् के अध्यक्ष महन्त नरेंद्र गिरि द्वारा जारी इस चार पन्नों के समझौता प्रस्ताव में कहा गया है कि बोर्ड भारत में आपसी सद्‌भाव बनाए रखने की दृष्टि से समझौते के लिए राम मंदिर के पक्षकारों के समक्ष प्रस्ताव को प्रस्तुत कर रहा है। उच्चतम न्यायालय में पिछली १८ नवम्बर को दाखिल किए गए इस प्रस्ताव पर अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद् के अध्यक्ष महन्त नरेंद्र गिरि, रामजन्मभूमि न्यास के महंत नृत्य गोपाल दास, पूर्व सांसद रामविलास वेदान्ती और निर्वाणी अखाड़ा के महंत धर्मदास एवं कई अन्य धर्माचार्यों ने भी सहमति देते हुए दस्तखत किए हैं।

प्रस्ताव के मुताबिक समझौते के पाँच बिन्दु हैं -

१. उत्तर प्रदेश शिया सेंट्रल वक्फ बोर्ड विवादित बाबरी मस्जिद से सम्बन्धित सम्पूर्ण भूमि पर राष्ट्रहित में विवाद को समाप्त करने के लिए अपना पूर्ण अधिकार सम्पूर्ण जमीन पर से छोड़ने को तैयार है।

२. हिन्दू समाज भव्य राम मंदिर का निर्माण करे, बोर्ड को भविष्य में कोई आपत्ति नहीं होगी।

३. अयोध्या की सीमा से बाहर से लखनऊ के हुसैनाबाद मोहल्ला स्थित घंटाघर के सामने खाली पड़ी नजूल की जमीन में से १ एकड़ जमीन उत्तर प्रदेश सरकार शिया मुसलमानों को आवंटित कर दे। इसके लिए बोर्ड ने उत्तर प्रदेश सरकार से लिखित रूप में आवेदन भी कर दिया है।

४. सरकार से जमीन आवंटित होती है तो इस जमीन पर शिया बोर्ड नई मस्जिद के निर्माण के लिए कमेटी गठित करेगा। मस्जिद का निर्माण बोर्ड अपने संसाधनों से करेगा।

५. बोर्ड का मानना है कि लखनऊ में बनने वाली मस्जिद का नाम किसी मुगल बादशाह या मीर बांकी के नाम पर नहीं होगा। बोर्ड इस मस्जिद का नाम 'मस्जिद-ए-अमन' रखेगा ताकि पूरे देश में इस मस्जिद से आपसी भाईचारे व शान्ति का संदेश फैले।

हालांकि, शिया वक्फ बोर्ड के इस हस्तक्षेप का अखिल भारतीय सुन्नी वक्फ बोर्ड ने विरोध किया। उसका दावा है कि उनके

दोनों समुदायों के बीच पहले ही १९४६ में इसे मस्जिद घोषित करके इसका न्यायिक फैसला हो चुका है।
शिया वक्फ बोर्ड का कहना है विवादित स्थान पर मस्जिद बनाने की कुरान भी इजाजत नहीं देता है और जहाँ तक मस्जिद के हटने का सवाल है तो कई इस्लामिक देशों में ऐसा किया जा चुका है। समझौते में ऐसी मस्जिदों का उल्लेख भी किया गया है।
शिया सेन्ट्रल वक्फ बोर्ड द्वारा जो समझौता प्रस्तावित है यदि व्यापक हित को दृष्टि में रखकर सुन्नी वक्फ बोर्ड सदाशयता दिखाता है तो स्वतंत्रता के पश्चात् एक ऐसी मिसाल कायम होगी जो दोनों प्रमुख समुदायों के मध्य एक ऐसे पुल का निर्माण करेगी जिसकी नींव आपसी भाईचारे व परस्पर विश्वास, सहयोग, सहृदयता एवं उत्सर्ग से निर्मित होगी। राजनीति ने और अंग्रेजों की कूटनीति ने जिस खाई को पैदा किया और बाद के स्वार्थपरस्त नेताओं ने जिसे और चौड़ी किया उसका पटना संभव है। सबसे बड़ी बात होगी कि सामुदायिक हितों के मामलों में भी दूसरे समुदाय द्वारा हितैषी के रूप में कही बात को भी संदेह से देखने की प्रवृत्ति न्यून तो हो ही सकेगी। श्री राम के जन्म दिवस के अवसर पर प्रभु से प्रार्थना है कि वे कृपा करें कि मुस्लिम भाइयों के एक वर्ग में उपजी सदाशयता अन्य मुस्लिम वर्ग में भी साकार हो और आपसी समझौते से समस्या का समाधान हो जाय।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०१/१८ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०१/१८** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), श्री बीरेन्द्र कर, भुवनेश्वर (उड़ीसा), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री जीवनलाल आर्य; अशोक विहार (दिल्ली), श्री इन्द्रजीत देव; यमुनानगर (हरियाणा), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री गोवर्धन लाल झंवर; आष्टा (म.प्र.), श्री राजनारायण चौधरी; शाजापुर (म.प्र.), श्री आशीष अग्रवाल; इन्दौर (म.प्र.), श्री कृष्ण कुमार सोनी; उदयपुर (राज.), श्री सत्यनारायण तोलम्बिया; शाहपुरा (राज.), श्रीमती सुनीता सोनी; बीकानेर (राज.), श्री धर्मवीर आसेरी; बीकानेर (राज.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री अनन्त लाल उज्जैनिया; भोपाल (म.प्र.), श्री बाबू लाल आर्य; पिपल्या मंडी (म.प्र.), श्री यज्ञसेन चौहान; विजयनगर (राज.), श्री राम प्रसाद श्रीवास्तव; लखनऊ (उ.प्र.), श्री रमेश चन्द्र गुप्ता; दिल्ली, श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरि.)।
सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०३/१८

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए।(सप्तम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१ अ	१		दि	१	ल १		२	२	
३ पु		३ षा	३		४	न्तः ४		४	ण ४
५	तमा ५		६	प	६		७	न ७	

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. समाधि योग से क्या नष्ट होते हैं?
२. 'हे परमेश्वर मेरे शत्रुओं का नाश कर दो' ऐसी प्रार्थना करनी चाहिये या नहीं?
३. किसके उपरान्त प्रार्थना करनी योग्य है?
४. परमात्मा के योग से प्राप्त आनन्द को जीवात्मा किससे ग्रहण करता है?
५. उपासक परमेश्वर की आज्ञानुकूल किसे समर्पित कर दे?
६. परमेश्वर सबसे अधिक वेगवान है क्योंकि वह कैसा है?
७. जिससे ज्यों का त्यों जाना जाय उसे क्या कहते हैं?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०१/१८ का सही उत्तर

१. अनादि	२. अनन्त	३. मन	४. सुषुप्ति
५. अधर्म	६. वैर	७. लम्पट	८. पुरुषार्थ

"विस्तृत नियम पृष्ठ २४ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अप्रैल २०१८

नव सवंत्सर, सृष्टिसंवत् - गुढ़ीपाड़वा एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस पर-विशेष

संवत्सर का प्रारम्भ आदि सृष्टि में शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन, प्रतिपदा को प्रथम सूर्योदय होने पर हुआ था। आज गुढ़ीपड़वा अर्थात् सृष्टि संवत् की आयु चैत्रमास की प्रतिपदा को- १ अरब, ९६ करोड, ०८ लाख, ५३ हजार, ११८ वर्ष हो गयी थी। नूतन वर्ष के स्वागतार्थ आर्य संस्कृति में आनन्दानुभव के साथ यज्ञादि धर्मानुष्ठान पूर्वक उत्सव मनाने की परिपाटी शुरू से रही है। ऋग्वेद की ऋचा है-

ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः।।
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी।। - ऋग्- १०/१९०/१-२

इसमें सृष्टि उत्पत्ति का क्रम देते हुए बताया गया है कि सर्वप्रथम ऋत और सत्य नामक सार्वकालिक और सार्वभौमिक नियमों का प्रादुर्भाव हुआ। फिर मूल प्रकृति में विकृति होकर अन्तरिक्षस्थ समुद्र के प्रकट होने के पश्चात् विश्व के कर्त्ता ने अहोरात्रों (दिन-रात) को करते हुए संवत्सर को बनाया।

वेदोपदेश द्वारा इस संवत्सर के आरम्भ की कल्पना का ज्ञान सर्वप्रथम मन्त्र-द्रष्टा ऋषियों को हुआ। उन्होंने जान लिया कि प्रत्येक सृष्टि, कल्प के आदि में यथानियम होती है। उन्होंने यह भी जाना कि इतने अहोरात्रों (दिन-रात) के पश्चात् आज के दिन नव-संवत्सर के आरम्भ का नियम है। उसी के अनुसार प्रतिवर्ष संवत्सरारम्भ होकर- वर्ष, मास और अहोरात्र की कालगणना संसार में प्रचलित हुई।

इस प्रकार सृष्टि का प्रारम्भ चैत्र के प्रथम दिन अर्थात् प्रतिपदा को हुआ। सृष्टि का प्रथम मास वैदिक संज्ञानुसार मधु कहलाया था और वही ज्योतिष में चन्द्रकाल गणनानुसार चैत्र कहलाने लगा था। ज्योतिष के हिमाद्रिग्रन्थ में भी श्लोक आया है-

चैत्र मासि जगद ब्रह्मा, ससर्ज प्रथमऽहनि।
शुक्ल पक्षे समग्रन्तु, तदा सूर्योदय सति।।

अर्थात् चैत्र शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा ने जगत् की रचना की।

प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य भास्कराचार्य कृत सिद्धान्त शिरोमणि में भी आया है,- चैत्रमास शुक्ल पक्ष के आरम्भ में दिन, मास, वर्ष, युग आदि एक साथ आरम्भ हुए। आगे चलकर इस पूर्व परम्परा के अनुसार आर्यों के अधिकांश संवत् चैत्र प्रतिपदा से ही शुरू किये गए। ब्रह्मदिन, सृष्टि संवत्, वैवस्वत मनु का मन्वन्तर, सत्युगादि, कलि संवत्, विक्रमी संवत्, चैत्र प्रतिपदा से ही आरम्भ होते हैं।

विक्रमी संवत २०७४ से आज २०७५ हो रहा है, सृष्टि की उत्पत्ति, काल गणना का शुभारम्भ आज से ही हुआ है। इसके साथ ही श्रीराम का राज्यारोहण, महाराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक, महाराज विक्रमादित्य का विजयोत्सव भी इसी दिन किया गया। ऋषि दयानन्द ने चैत्र सुदी प्रतिपदा को ही विक्रमी संवत १९३२ में तद्नुसार ई. स. १८७५ में गिरगाँव मुम्बई में पारसी डॉ. मानक जी अदेर जी के उद्यान में आर्यसमाज की स्थापना की। समाज के सिद्धान्तों और विधान को २७ नियमों में आबद्ध किया गया। प्रारम्भ में ही महादेव गोविंद रानाडे, गोपालराव हरि देशमुख, सेवकलाल कृष्णदास, गिरधरलाल दयालदास कोठारी आदि कई प्रतिष्ठित पुरुष आर्यसमाज के सदस्य बने। बम्बई के अनन्तर १८७७ ई. स. में लाहौर में आर्यसमाज की स्थापना हुई। यहाँ रायबहादुर मूलराज तथा लाला साईंदास जैसे कर्मठ सहयोगी ऋषि दयानन्द को मिले। यहाँ आर्यसमाज के २८ नियमों को संक्षिप्त कर केवल १० नियम बनाये गये। ऋषि दयानन्द के जीवन-काल में ही आर्यसमाज का सार्वत्रिक प्रचार हुआ, देश के सभी भागों में उसकी शतशः

शाखाएँ स्थापित हुईं और सहस्रों व्यक्ति आर्यसमाज के सदस्य बने। ऋषि दयानन्द द्वारा प्रवर्तित यह आर्यसमाज का आन्दोलन उन्नीसवीं शती का सबसे महत्वपूर्ण आन्दोलन था।

ऋषि दयानन्द वेद शास्त्रों के गंभीर विद्वान्, महान् सुधारक, राष्ट्रवादी, प्रगतिशील चिन्तक तथा श्रेष्ठ साहित्यकार थे। आधुनिक भारत के पुनर्जागरण के नेताओं में उनका स्थान अद्वितीय है। सत्यनिष्ठा, निर्भीकता, स्पष्टवादिता, करुणाशीलता और अहंकारशून्यता उनके ओजस्वी व्यक्तित्व के अभिन्न अंग थे। वे अगाध गुणों के सागर थे और उनका कर्मक्षेत्र भी अगाध था।

वेदों के सत्यस्वरूप के सम्बन्ध में छाया सघन अंधकार और आर्यसाहित्य के सम्बन्ध में भारत की तथाकथित पंडित मंडली में व्यापक उपेक्षा और इनके साथ ही तांत्रिक तथा वाममार्गी मतों का प्राबल्य शूल बनकर ऋषि के हृदय को अत्यन्त वेदना पहुँचाता था। मातृभूमि की दासता उन्हें अहर्निश अखरती थी, गोवंश का ह्रास मानसिक पीड़ा पहुँचाता था। वे भारतवासियों की दरिद्र-दलित दशा से दुःखी थे। और दूसरी तरफ अंग्रेजी शिक्षा के परिणामस्वरूप भारतीयों का एक वर्ग पश्चिम की चकाचौंध की आँधी में बह रहा था।

ऐसे समय में ऋषि दयानन्द ने घोषणा की कि, वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। रूढ़ियों और अंधविश्वासों की जड़ों पर कुठाराघात कर राष्ट्र में जागृति का शंखनाद किया। विधर्मियों को शास्त्रार्थ की चुनौती देकर उनके छक्के छुड़ाने के साथ, आर्य धर्म की श्रेष्ठता का भी उन्हें कायल बना दिया। उन्होंने प्रगति के नाम पर केवल भागने का नहीं, अपितु पीछे की ओर देखने का तथा भविष्य का पथ प्रशस्त करने का आह्वान किया। उन्होंने स्त्रीशिक्षा, शिक्षा की गुरुकुल प्रणाली और देश की एक राष्ट्रभाषा के रूप में देवनागरी में लिखित हिन्दी को प्रतिष्ठित करने का युग प्रवर्तक घोष किया। उनके द्वारा प्रशस्त पथ पर ही राष्ट्रीय क्रान्ति का रथ आगे बढ़ पाया। वे अपने समय के सबसे बड़े समाज संस्कारक बने।

आर्य समाज की स्थापना उनका सबसे अन्यतम कार्य था। हजारों वर्षों से अज्ञानान्धकार में भटक रहे, राजनैतिक एवं मानसिक दासता के बन्धनों में जकड़े, अवैदिक मत-मतान्तरों एवं अन्धविश्वासों से ग्रस्त आर्यावर्त्त को आज से लगभग २०० वर्ष पूर्व (हमने अभी ऋषि दयानन्द का १९४ वां जन्मदिन मनाया है।) आदित्य ब्रह्मचारी ऋषि दयानन्द ने झकझोरा था और सहस्राब्दियों से कुंठित, शोषित एवं अपमानित इस देश को राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक क्रान्ति के मार्ग पर लाकर खड़ा किया था। सन् १८७५ ई.स. में महर्षि द्वारा स्थापित आर्यसमाज समस्त बुराईयों के विरुद्ध एक बगावत एवं विद्रोह की आग बनकर फैल गया। और जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्र में राजनैतिक एंव सामाजिक चेतना का अभ्युदय हुआ। साथ ही 'वैदिक गरिमा' को पुनः प्राप्त करने की उदात्त महत्वाकांक्षा- **'इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तो अराव्णः ।।'** (ऋग्वेद ९/६३/५) के रूप में सुनाई पड़ी। इस नारे को साकार करने के लिए ही आर्यसमाज की नींव रखी गई। साथ ही इस पवित्र संस्था का उद्देश्य रखा गया कि, 'समस्त संसार का उपकार करना अर्थात् शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना।'

किसी भी प्रकार की संकीर्णता अथवा सांप्रदायिकता, जातीयता अथवा कृत्रिम देशभक्ति का लेशमात्र भी न रखते हुए, मानवमात्र के लिए इतना उदारतापूर्ण तथा इतना सर्वांगीण उद्देश्य शायद ही किसी अन्य संस्था के संस्थापक ने घोषित किया हो। ऋषि दयानन्द ने सर्वत्र आर्य का अर्थ- धर्मयुक्त गुणकर्म स्वभाव वाले, उत्तम गुण कर्म स्वभाव वाले, उत्तम जन इत्यादि किया है, और इन्हीं के संगठन को आर्यसमाज की संज्ञा दी है। ऋषि दयानन्द को अभीष्ट था कि, 'सत्पुरुष, सदाचारी और परोपकारी व्यक्ति आर्यसमाज के सदस्य बनें।'

आर्यसमाज का प्रारंभिक स्वरूप बड़ा तेजस्वी था। वह एक सशक्त ज्वार के समान था, जिसने न केवल भारत को अपितु सुसंस्कृत विश्व को आप्लावित कर आन्दोलित कर दिया था। अमेरिका के प्रसिद्ध दार्शनिक डॉक्टर एण्ड्रयूज

> **"ऋषि दयानन्द को अभीष्ट था कि सत्पुरुष, सदाचारी और परोपकारी व्यक्ति आर्यसमाज के सदस्य बनें।"**

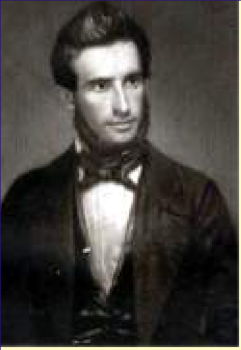

जैकसन डेविस ने आर्यसमाज के वास्तविक स्वरूप का जो चित्र खींचा है, वह बड़ा ही अनूठा है। उसको उसी रूप में प्रस्तुत करने का मैं लोभ संवरण नहीं कर पा रही हूँ। आर्यसमाज को उसने जिस रूप में देखा, उसका भाषान्तर इस प्रकार से है कि, 'मुझको एक आग दिखाई पड़ती है। जो सब जगह फैल रही है.....। अमेरिका के विस्तीर्ण मैदानों, अफ्रीका के बीहड़ जंगलों, एशिया की ऊँची छोटी चोटियों और यूरोप के महान् राज्यों पर मुझे उसकी लपटें सुलगती हुई दिखाई दे रही हैं। इस अपरिमित आग को देखकर, जो निस्सन्देह राज्यों, साम्राज्यों और समस्त संसार की नीति तथा व्यवस्था के सब दोषों को भस्म कर डालेगी........मैं अत्यन्त आनन्दित होकर हर्षमय जीवन बिता रहा हूँ। असीम उन्नति की आशा-विद्युत से मनुष्य का हृदय चमक रहा है। वक्ताओं, कवियों और ग्रंथ निर्माताओं की शिक्षाओं में भी कभी-कभी उसकी चमक दीख जाती है। आर्यसमाज की भट्टी में यह आग सनातन पुरातन आर्यधर्म को स्वाभाविक पवित्र रूप में लाने के लिए सुलगाई गई है, भारत के एक परम योगी ऋषि दयानन्द के हृदय में यह आग प्रगट हुई थी। हिन्दू और मुसलमान उस प्रचण्ड आग को बुझाने के लिए चारों ओर से पूरे वेग के साथ दौड़े। ईसाइयों ने एशिया की इस प्रचण्ड ज्योति को बुझाने में हिन्दुओं और मुसलमानों का साथ दिया। परन्तु ईश्वरीय ज्योति और भी अधिक प्रज्ज्वलित हो चारों ओर फैल गई। सम्पूर्ण विरोध एवं विघ्न-बाधाओं की घटा इस आग के सामने न टिक सकी। कुतर्क के स्थान में तर्क, पाप के स्थान में पुण्य, अविश्वास के स्थान में विश्वास, द्वेष के स्थान में सद्भाव, वैर के स्थान में समता, नरक के स्थान में स्वर्ग, दुःख के स्थान में सुख, भूतप्रेतों के स्थान में परमेश्वर एवं प्रकृति का राज्य हो जाएगा। मैं इस आग को परम मांगलिक मानता हूँ। जब यह आग सुन्दर भूतल पर नवजीवन का निर्माण करेगी, तब सर्वत्र सुख, शान्ति और सन्तोष छा जाएगा।'

यह है आर्यसमाज के उज्ज्वल स्वरूप की झलक। प्रारम्भिक काल में आर्यसमाज के गरिमामय आन्दोलन का यही उद्दीप्त और उज्ज्वल स्वरूप था। उसका इतिहास भी कम गौरवमय नहीं है। भारतमाता के बन्धन काटने का श्रेय आर्यसमाज को ही है।

सर वैलेण्टाइन शिरोल ने तमाम भारत का दौरा करने के बाद अपनी पुस्तक 'अनरैस्ट इन इण्डिया' की अन्तिम पंक्तियों में यह रिपोर्ट लिखी थी कि, 'जहाँ-जहाँ आर्यसमाज है, वहाँ-वहाँ राजद्रोह प्रबल है।' महात्मा गांधी ने भी सत्याग्रह परीक्षण के बाद यह घोषणा की थी कि, 'जेलों में रह कर कष्ट सहने वालों में ८० प्रतिशत आर्यसमाजी हैं।' इंग्लैण्ड के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री रैमजे मॅकडानल्ड ने स्वामी श्रद्धानन्द की तपस्या से खड़े गुरुकुल कांगड़ी का निरीक्षण करने के बाद ये महत्वपूर्ण बयान दिये थे कि, 'पहाड़ों और नदी के बीच में स्थित उस गुरुकुल नाम की भूमि में बच्चों को ऐसा प्रशिक्षण दिया जा रहा है कि जिनमें से एक भी सरकार का नौकर बनने को तैयार नहीं होगा। माँ-बाप से बिल्कुल अलग रखकर जिनको अलौकिक पाठ पढ़ा करके आर्यसमाज का सच्चा मिशनरी बनाया जा रहा है, उनसे कदापि यह आशा नहीं की जा सकती कि वे किसी अत्याचार के आगे झुकेंगे।'

इतिहास बताता है कि, उस समय आर्यसमाज की धमनियों में अत्याचार, शोषण, पाखण्ड और अज्ञान को देखते ही खून खौलता था एक अजीब उत्साह और उमंग उसके रग-रग में व्याप्त था। अज्ञान, अन्याय, अभाव, आलस्य रूपी दानवों को समाप्त करने के लिए वे अपना लाल-लाल खून तक बहाने को तैयार रहते थे। श्रद्धानन्द, लेखराम, राजपाल जैसों का शानदार बलिदान आज भी हमें चुनौती दे रहा है। जिस समाज के मस्त दीवाने और परवाने अपने स्वार्थ को लात मारकर परमार्थ की वेदी पर आहूत हो गए, जिसके प्रहरियों ने विद्वान् बनकर, कवि बनकर, शास्त्रार्थ महारथी बनकर, नेता और क्रान्तिकारी बनकर, सेवक बनकर, बलिदानी बनकर विश्व का कायाकल्प करने की भूमिका अदा की है, उनके अधूरे कार्यों को पूरा करना होगा।

देश के राष्ट्रीय जागरण और स्वाधीनता-प्राप्ति के पुनीत कार्य में आर्यसमाज का सर्वोपरि योगदान रहा है। समाजसुधार के क्षेत्र में आर्यसमाज प्रमुख संस्था रही है। विवाहप्रथा में समुचित सुधार, वर्णाश्रम-व्यवस्था की वैज्ञानिक व्याख्या, अस्पृश्यता-निवारण, नारी शिक्षा आदि क्षेत्रों में आर्यसमाज का कर्तृत्व श्लाघनीय रहा है। सुधार और संस्कार का कार्य वह आज भी जीवन्त रूप कर रहा है। इतिहास ने स्वीकार किया है कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में आर्यसमाज का संस्थागत योगदान सर्वाधिक महत्वपूर्ण और मूल्यवान रहा है। आर्यसमाज ने मानवी विकास के सभी पहलुओं को स्पर्श किया है। राष्ट्रवाद और मानव जीवन के सभी अंगों का शुद्ध व उज्ज्वल रूप आर्यसमाज को अन्य आन्दोलनों से बिल्कुल अलग तथा महत्वपूर्ण बना देता है।

-डॉ. मंजुलता विद्यार्थी
अध्यक्षा-आर्यसमाज, अकोला

हिन्दी की देश में राजभाषा या राष्ट्रभाषा के रूप में जो भी स्थिति है, उसके लिए भले ही राजनीति जिम्मेदार हो, पर मातृभाषा के रूप में हिन्दी प्रदेशों में उसकी जैसी स्थिति है, उसके लिए हमें अपनी सांस्कृतिक दुर्बलताओं पर ध्यान देना होगा। हिन्दी प्रदेशों की यह कटु वास्तविकता है कि महाराष्ट्र, बंगाल, तमिलनाडु आदि के लोग अपनी भाषा और साहित्य का जैसा सम्मान करते हैं, हिन्दी वाले अपनी भाषा और अपने साहित्य का वैसा सम्मान नहीं करते और न भाषा की शुद्धता की चिन्ता करते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि हम पहले अपने घर को ठीक करें। कहा भी है, 'घर का दिया जलाकर मंदिर का फिर जलाना।'

पिछले दिनों टीवी पर एक समाचार देखा। एक राजनीतिक दल की दिल्ली निवासी, शुरू से अंत तक दिल्ली में ही शिक्षित महिला नेता ने एक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए बोर्ड पर सन्देश लिखा, 'सवच्छ भारत, सवस्थ भारत'। उधर सहारनपुर के दंगे में अपने को पीड़ित बताने वाले पक्ष के हाथों में एक पोस्टर देखा, 'जै गुरुदेव, जै भीम, जै भीम आर्मी के चीफ एडवोकेट चंदर शेककर आजाद की उ.प्र. सरकार और उ.प्र. पुलिस को चेतावनी 'बाज आ जाओ, अगर हम बिगड़ गए तो आप से सम्बले न सम्बलेंगे, हमारी माता हमारी भहनों को परेशान करना बंद करो...।'

जैसे बहू की अकुशलता के लिए उसकी माँ को दोषी कहा जाता है, वैसे ही वर्तनी की इस स्थिति के लिए लोग हिन्दी शिक्षक को दोषी बताएँगे। उसे दोषमुक्त किया भी नहीं जा सकता, पर क्या अकेला वही दोषी है? वस्तुतः शुद्ध उच्चारण और शुद्ध वर्तनी का सम्बन्ध केवल हिन्दी शिक्षक से नहीं, हर उस शिक्षक से है जो हिन्दी का प्रयोग करता है। हिन्दी प्रदेश में हम दो भूलें करते आ रहे हैं। एक का सम्बन्ध स्थानीय बोलियों से है, तो दूसरी का हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों से। हिन्दी प्रदेश में स्थानीय बोलियों के उच्चारण और वर्तनी का कुछ ऐसा आकर्षण है कि हम मानक हिन्दी के उच्चारण एवं वर्तनी पर अपेक्षित बल नहीं देते। जैसे, अवधी भाषी 'क्ष' (कक्षा) को 'छ' (कच्छा) बोलता है, तो मारवाड़ी और हाड़ौती भाषी 'न' (पानी) को 'ण' (पाणी)। शिक्षा का आयोजन जिन उद्देश्यों से किया जाता है, उनमें एक है भाषा का मानक रूप सीखना। बोलियाँ तो हर भाषा में होती हैं फिर चाहे वह भारत की तमिल, तेलगु, मलयालम, बांग्ला आदि भाषाएँ हों या यूरोप की अंग्रेजी, जर्मन, फ्रांसीसी आदि। बोली वस्तुतः मातृभाषा का वह संदर्भ है जिसे 'पालने या झूले की भाषा' कहते हैं, यह व्यक्ति को उसके परिवार से और लघु समाज से जोड़ता है, पर मातृभाषा का दूसरा सन्दर्भ उसका वह मानक रूप होता है जिसके सहारे व्यक्ति अपने बृहत्तर समाज से जुड़ता है। इसीलिए इसे 'समाजीकरण की भाषा' कहते हैं। इसी को कुछ लोग साहित्यिक भाषा भी कहते हैं। भाषा के इसी मानक रूप का प्रयोग सभी देशों में प्राथमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक न केवल उस भाषा की शिक्षा में, बल्कि उसके माध्यम से पढ़ाए जाने वाले हर विषय में किया जाता है। मातृभाषा का यह रूप सीखने के लिए शब्दों के शुद्ध उच्चारण और शुद्ध वर्तनी का विशेष अभ्यास करना होता है। इस ओर सबसे अधिक ध्यान देने की आवश्यकता प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर होती है, पर हिन्दी का यह दुर्भाग्य है कि प्राथमिक स्तर पर ऐसे शिक्षक बहुत कम मिलते हैं जिनका उच्चारण शुद्ध हो और जिन्हें शुद्ध वर्तनी का ज्ञान हो ताकि वे अपने विद्यार्थियों के सामने 'आदर्श' उपस्थित कर सकें। प्राथमिक स्तर से विद्यार्थी जितना आगे बढ़ता जाता है, अशुद्ध उच्चारण और अशुद्ध वर्तनी के

कारण उसे सामाजिक अपमान सहना पड़ता है, पर बाद में इनसे पिंड छुड़ाना आसान भी नहीं होता।

हिन्दी हो या अन्य भारतीय भाषाएँ, सभी में पुराना साहित्य भी है और आधुनिक भी। इनमें अनेक शब्द ऐसे हैं जिनकी वर्तनी पुराने साहित्य में कुछ और थी, मानकीकरण करने के बाद आधुनिक साहित्य में उनका रूप कुछ और निर्धारित किया गया है। पाठ्यपुस्तक में जब बच्चों के सामने पुराना साहित्य भी रख दिया जाता है, तो भिन्न वर्तनी देखकर प्रायः बच्चा या तो यह मान लेता है कि दोनों वर्तनी ठीक हैं, या फिर यह सोचता है कि वर्तनी कोई महत्वपूर्ण विषय नहीं, खुली छूट है, जैसे चाहो वैसे लिखो। हिन्दी में हमारे बच्चों के सामने पुराना साहित्य भी प्रस्तुत कर दिया जाता है जो ब्रज, अवधी, मैथिली, राजस्थानी आदि में होता है और उनकी वर्तनी भी भिन्न होती है। हम यह भूल जाते हैं कि भाषा शिक्षक के रूप में हमारा उद्देश्य बच्चे को भाषा का मानक रूप सिखाना है। इस दृष्टि से हमें कम से कम प्राथमिक कक्षाओं की पुस्तकों में पुराने कवियों की रचनाएँ शामिल करनी ही नहीं चाहिए। यह कार्य तो वस्तुतः पाठ्यपुस्तक तैयार करने वालों का है, फिर भी इतना काम तो शिक्षक भी कर सकता है कि आधुनिक साहित्य को पहले और पुराने साहित्य को बाद में पढ़ाए ताकि मानक हिन्दी का स्वरूप बच्चों के सामने पहले आए।

हमारी सांस्कृतिक दुर्बलता का एक दुष्परिणाम यह भी है कि हमारे समाज में, विशेष रूप से हिन्दीभाषी समाज में पढ़ने की संस्कृति नष्ट होती जा रही है। जिस साहित्य पर भारतीय ज्ञानपीठ, साहित्य अकेडेमी जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कार दिए जाते हैं, उसे पढ़ना तो दूर, उसकी कोई परिचयात्मक चर्चा तक विद्यालय या विश्वविद्यालय में कहीं सुनाई नहीं देती। शिक्षा के मंदिर में सरस्वती का यह निरादर क्यों? देश में १९वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में शुरू हुए सांस्कृतिक आन्दोलनों के समाज पर जो प्रभाव पड़े उनमें एक यह भी था कि विभिन्न अवसरों पर, विशेष रूप से विवाह के अवसर पर लोग उपहार में अन्य चीजों के बजाय वेद, उपनिषद्, गीता, रामायण, आदि धार्मिक, साहित्यिक पुस्तकें देने लगे। प्रसिद्ध साहित्यकार कृष्णा सोबती ने एक साक्षात्कार में बताया था, 'मेरी माँ अपने दहेज में कपड़ों के साथ ७-८ किताबें लाई थीं, सत्यार्थप्रकाश, स्त्री सुबोधिनी, रमणी रहस्य, रामायण, महाभारत आदि।' तब प्रकाशक भी 'सप्रेम भेंट' शीर्षक से एक मुद्रित पृष्ठ इसी काम के लिए पुस्तकों में देते थे। पुस्तकों के विज्ञापनों में यह लिखा जाता था कि यह पुस्तक अमुक अवसर पर उपहार में देने योग्य है। कविराज हरनाम दास बी.ए. की एक पुस्तक 'विवाहित जीवन' के विज्ञापन पुराने लोगों को याद होंगे जिनकी पहली पंक्ति कुछ इस प्रकार होती थी 'विवाह में देने का सर्वोत्तम उपहार।' स्कूलों में वार्षिक परीक्षा में अच्छे नंबरों से पास होने वाले बच्चों को तथा अन्त्याक्षरी, वाद-विवाद जैसी विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेताओं को पुरस्कार में पुस्तकें ही दी जाती थीं। शील्ड, कप आदि का प्रचलन बाद में खेलों में शुरू हुआ और काफी समय तक खेलों तक ही सीमित रहा।

जन्मदिन मनाने का तब रिवाज नहीं था, पर जब यह प्रथा शुरू हुई तब भी शुरू में बच्चों को पुस्तकें ही उपहार में दी जाती थीं। जिसे ये पुस्तकें मिलती थीं, वह इन्हें संभाल कर

रखता था। विभिन्न अवसरों पर बड़े गर्व से कहता था कि अमुक अवसर पर अमुक व्यक्ति ने मुझे यह उपहार में दी थी। घर में पुस्तकें होती थीं तो अन्य लोग भी इन्हें पढ़ते थे। सांस्कृतिक आन्दोलनों का ऐसा ही एक प्रभाव यह भी पड़ा कि मोहल्ले में सार्वजनिक पुस्तकालय बनने लगे। आर्य-समाज, सेवा-मंडल आदि विभिन्न धार्मिक-सामाजिक संगठनों के भी पुस्तकालय-वाचनालय होते थे। दुर्भाग्य से स्वतंत्रता के बाद यह परम्परा शिथिल होती चली गई।

प्रायः लोग टीवी-इण्टरनेट, मोबाइल आदि के माध्यम से विकसित हुई अपसंस्कृति को पठन-पाठन की संस्कृति के नाश का कारण मानते हैं, पर शायद महाराष्ट्र के दो उदाहरण हमारी आँखें खोलने के लिए पर्याप्त हों। वहाँ पुणे

और महाबलेश्वर के बीच सड़क किनारे बसे भिलार गाँव का मुख्य व्यवसाय तो स्ट्राबेरी का कारोबार है, पर गाँव की एक विशेषता यह है कि इसके हर घर में (कृपया ध्यान दें, हर घर में) पुस्तकालय है जिसमें धार्मिक, आध्यात्मिक, साहित्यिक, सुधार आन्दोलन, खेलकूद, यात्रा वृत्तान्त, स्त्री केंद्रित-बाल केंद्रित साहित्य आदि विभिन्न विषयों से सम्बन्धित पुस्तकें हैं,

संगृहीत पुस्तकों के रचनाकारों के चित्र भी हैं। जिस कक्ष में

पुस्तकें रखी हैं, वहाँ बैठकर पढ़ने की व्यवस्था भी है। कुछ लोग इसी प्रयोजन से वहाँ आते हैं तो कुछ रास्ते में रुककर इसका आनन्द लेते हैं। मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस ने अभी हाल ही में इसे 'पुस्तकाचे गाँव' कहा है और सरकार अब इस गाँव को यूनेस्को से 'बुक कैपिटल' का दर्जा दिलाने की तैयारी कर रही है।

ऐसा ही एक उदाहरण है पुणे में आयोजित 'कोथरुड साहित्य सम्मेलन' का जिसमें भाग लेने का मुझे भी लगभग पच्चीस वर्ष पूर्व अवसर मिला था। कोथरुड को पुणे का एक मोहल्ला कह सकते हैं, अतः यह एक नगर का नहीं, एक मोहल्ले का साहित्य सम्मेलन था। पता चला कि इस मोहल्ले में ऐसे कई साहित्यकार रहते हैं जिन्हें राज्य और राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार मिले हैं। सम्मेलन में युवा-प्रौढ़-वृद्ध अर्थात् सभी आयुवर्ग के लगभग डेढ हजार स्त्री-पुरुष थे।

इस सम्मेलन में कई बातें देखकर मेरा ध्यान साहित्य प्रेमी मराठीभाषी और हिन्दीभाषी समाज के अंतर पर गया। एक युवा कवि को जब मंच पर आमंत्रित किया गया तो उनका परिचय देते हुए बताया कि पिछले तीन वर्ष में उनके एक कविता संग्रह की लगभग दस हजार प्रतियाँ बिक चुकी हैं। मुझे अपने कानों पर सहसा विश्वास नहीं हुआ, अतः मैंने पास बैठे मित्र से पुष्टि की। इस लोकप्रियता का एक कारण यह भी बताया कि पुस्तक का मूल्य दस रुपये है और यह मुंबई में तो लोकल ट्रेन के प्लेटफार्मों पर भी मिलती है। उधर मैंने देखा कि जब मंच पर चर्चा होती थी तो हाल में एकदम शांत वातावरण होता था। ऐसा लगता था जैसे श्रोता मन्त्र-मुग्ध से बैठे हों। और जब मंच से घोषणा होती थी कि श्रोताओं को यदि कुछ पूछना हो तो कृपया एक कागज पर अपना प्रश्न लिखकर दे दें, तो जरा-सी देर में मंच पर प्रश्नों का अम्बार लग जाता था। जब प्रश्न का उत्तर देने के लिए उसे पढ़ा जाता था तब विश्वास होता था कि श्रोता मंच पर की जा रही चर्चा को केवल 'सुन' नहीं रहे थे, 'गुन' भी रहे थे। सम्मेलन में चर्चा के लिए समय की अपनी सीमा थी। अतः दो-चार प्रश्नों के उत्तर देने के बाद मंच से कहा जाता था कि सम्मेलन का जो विवरण स्मारिका के रूप में छापा जाएगा, उसमें सभी प्रश्नों के उत्तर दिए जाएंगे। अतः यदि और भी कोई प्रश्न आप देना चाहें तो अमुक सज्जन को दे दें। मैं सोचने लगा कि क्या हिन्दी प्रदेश में ऐसे किसी सम्मेलन की कल्पना की जा सकती है?

महाराष्ट्र की इस 'साहित्यिक संस्कृति' से प्रेरणा लेकर हमें पुरानी उपयोगी परम्पराओं को पुनर्जीवित करना चाहिए और स्वस्थ नई परम्पराएं शुरू करनी चाहिए। समाज में यदि इस प्रकार के आयोजन सफलतापूर्वक करने हैं तो हमें विद्यालयों पर विशेष ध्यान देना होगा और विद्यालय परिसर में ही या अन्यत्र बच्चों के लिए विशेष रूप से विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रम (गोष्ठियां, चर्चाएं, पत्रवाचन आदि) आयोजित करने होंगे। बच्चों के कोर्स की पुस्तकों की सामग्री को भी इस रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। कहानियों का नाट्य रूपांतर और नाटकों का कहानी रूपांतर किया जा सकता है। साहित्य की ही नहीं, इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि की सामग्री को भी विभिन्न रूपों में प्रस्तुत करके बच्चों में साहित्यिक रुचि विकसित की जा सकती है। कोशिश यह होनी चाहिए कि उनमें अपनी भाषा के प्रति प्रेम विकसित हो, वे हिन्दी के शुद्ध मानक रूप का अभ्यास करें और उनकी साहित्यिक रुचियों का परिष्कार हो। ये काम कठिन नहीं, बात केवल जागरूकता की है, निष्ठा की है, संकल्प की है, समर्पण की है, अपने साहित्य प्रेम को समाज के धरातल पर स्थापित करने की है।

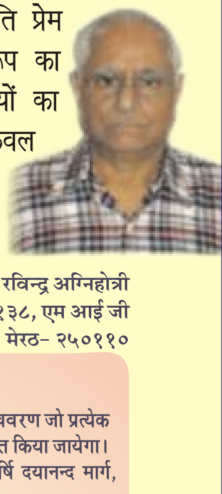

-डॉ. रविन्द्र अग्निहोत्री
पी- १३८, एम आई जी
पल्लवपुरम् फेज- २, मेरठ- २५०११०

फार्म.IV

समाचार पत्र के स्वामित्व और अन्य विशिष्टियों के बारे में विवरण जो प्रत्येक वर्ष फरवरी के अंतिम दिन के पश्चात् प्रथम अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

१. प्रकाशन का स्थानः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
२. प्रकाशन की नियत अवधिः– मासिक
३. मुद्रक का नामः– अशोक कुमार आर्य — राष्ट्रीयताः– भारतीय
पताः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
४. प्रकाशक का नामः– अशोक कुमार आर्य — राष्ट्रीयताः– भारतीय
पताः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
५. सम्पादक का नामः– अशोक कुमार आर्य — राष्ट्रीयताः– भारतीय
पताः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
६. उन व्यक्तियों के, जो समाचार पत्र के स्वामी हैं और उन भागीदारों या शेयरधारकों के, जो कुल पूँजी के 1 प्रतिशत से अधिक अंश के धारक हैं, नाम और पते।
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

मैं अशोक कुमार आर्य घोषणा करता हूँ कि ऊपर दी गई विशिष्टियाँ मेरे सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के अनुसार सत्य हैं।

तारीखः– ०७.०३.२०१८ — प्रकाशक के हस्ताक्षर

ओ३म्

Your child's future with indian culture....

Shivalik Vedic Anglo Residential

GURUKUL

C.B.S.E. Pattern Only for Boys

Admission Open

from Class V to IX

''शिक्षा, सुरक्षा, संस्कार और सेवा''

इन चार उद्देश्यों के साथ गुरुकुल का संचालन होगा।

आदरणीय बन्धु!

विद्यार्थी जीवन ज्ञान एवं शक्ति के संचय का काल है। बिना यथार्थ ज्ञान के किसी भी प्रकार के सुख की प्राप्ति केवल कल्पना मात्र है। प्राचीन काल में बालक के चहुंमुखी विकास के लिए माता-पिता श्रेष्ठ गुरुओं के कुल (गुरुकुल) में अध्ययन के लिए प्रविष्ट कराते थे, जहाँ सम्पूर्ण विद्याओं का पठन-पाठन एक ही स्थान पर उपलब्ध होने से विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास सभंव हो पाता था। कुछ शिथिलताओं के चलते कालान्तर में इसका स्वरूप परिवर्तित होता गया। वर्तमान काल में भी यदि हम अपने बच्चों का एक ही स्थान पर सम्पूर्ण विकास करने का विचार यदि अपने मन में रखते हैं तो वह मात्र गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही हो सकती है। इस चिन्तन को साकार रूप देने के लिए शिवालिक ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट ने ऋषियों की इस प्राचीन प्रणाली को आधुनिक शिक्षा के साथ सुनियोजित कर छात्रों की सर्वोन्नति के लिए शिवालिक वैदिक एंग्लो आवासीय गुरुकुल (Shivalik Vedic Anglo Residential Gurukul) **"S.V.A.R.G"**. का संचालन प्रारम्भ किया है। जिसमें **:(क).** शिक्षा (आधुनिक शिक्षा पद्धति के साथ-साथ वैदिक धर्म के आलोक में नैतिक शिक्षा द्वारा जीवन-निर्माण।) **(ख).** सुरक्षा (शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं चारित्रिक) **(ग)** संस्कार (शरीर व आत्मा को श्रेष्ठ गुण, कर्म एवं स्वभाव से सुशोभित करना।) **(घ).** सेवा (गुरुकुल में प्राप्त उत्तम गुणों के माध्यम से परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व की उन्नति के लिए अपना सात्त्विक योगदान सेवा के रूप में करना।)

माता-पिता परिवार में जिस प्रकार अपने शिशु का लालन-पालन एवं पोषण करते हैं वैसे ही लालित्यपूर्ण वातावरण में आपके बालक के जीवन का निर्माण विद्यालय में अपने विषय के श्रेष्ठतम आचार्यों एवं छात्रावास (आश्रम) में मातृ एवं पितृभाव के साथ सरंक्षकों द्वारा किया जायेगा। वर्तमान व्यस्ततम जीवन में माता-पिता एवं अभिभावकों के पास समय की अनुपलब्धता होने से परिवारों में बालकों के सम्पूर्ण शैक्षिक एवं चारित्रिक जीवन निर्माण कहीं पीछे छूट गया है। हम आपके उन स्वप्नों को साकार करने में आपका सहयोग करने के लिए आपके साथ कदम से कदम मिलाकर कार्य करने के लिए उत्सुक हैं। यह सुनहरा अवसर आपके लिए नवप्रभात लेकर आया है। इसका लाभ उठाएं।

Features

- Digital Smart Classes
- Sms Alert Service
- Lush Green Playground
- Eco Friendly Environment
- Activity Cum Learning Room
- Experienced & Dedicated Staff
- Special Focus on Moral Values
- Special Focus on interaction in English
- Horse Riding & Gun Shooting
- Digital & Well equipped Library
- Hi-Tech Computer Labs
- Music Room
- **Ultra Modern Fully Airconditioned Hostel with Stern supervision by wardens & CCTV (24x7)**
- **Pure Vegetarian & Authentic Mess with Spotless utensils**

Co-curricular Acitvities

- Debate
- Quiz
- Art & Craft
- Painting
- Educational Trips
- Meditation, Yoga & Hawan
- Festival Celebrations
- Language Lab Activities
- Book Reading Sessions
- House Competitions
- Creative Writing
- Music & Dance
- Collage Making
- MUN Clubs

Vill Aliyaspur, P.O. Sarawan -133206, Dosarka-Sadhaura Road, Ambala (Haryana),
E-mail: shivalikgurukul.ambala@gmail.com, Website : www.shivalikgurukul.com
Admission Helpline : 8901054781, 9671228002, 8813061212

अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम्। अधनस्य कुतो मित्रममित्रस्य कुतः सुखम्।

राष्ट्र निर्माण

किसी भी राष्ट्र की मजबूत बुलन्द इमारत के निर्माण के लिए सर्वाधिक आवश्यक है कि उस इमारत के निर्माण में प्रयोग होने वाली इकाई अर्थात् प्रत्येक ईंट मजबूत हो और अटूट बंधन में एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई हो। जिस प्रकार इमारत के निर्माण में ईंट का मजबूत होना आवश्यक है ठीक उसी प्रकार राष्ट्र के निर्माण में उसकी प्रत्येक इकाई अर्थात् प्रत्येक नागरिक का मजबूत होना आवश्यक है। प्रत्येक नागरिक के मजबूत होने के लिए उसमें कुछ गुण विशेष होने अत्यंत आवश्यक हैं।

अथर्ववेद के बारहवें कांड का प्रथम सूक्त 'भूमि सूक्त' के नाम से सुविख्यात है और अपनी मातृभूमि अपने राष्ट्र के निर्माण के लिए एक नागरिक के रूप में कतिपय गुणों को धारण करना अनिवार्य बताया गया है। **'सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।'** इस मंत्र में नागरिकों के लिए जिन आवश्यक गुणों का वर्णन किया गया है वह **बृहत्सत्यं** अर्थात् अटल सत्य निष्ठा, दूसरा **ऋतं-** अर्थात् ज्ञान, **उग्रं-** क्षात्रतेज, **तपः-** धर्म का पालन, **दीक्षा-** हर काम करने में दक्षता, **ब्रह्म-** ईश्वरीय ज्ञान, **यज्ञः-** परोपकार, दान और त्याग।

नागरिकों के ये गुण अपनी मातृभूमि, देश व राष्ट्र का पालन पोषण व रक्षण करते हैं। हमारी मातृभूमि हमारी धरती माता हम सभी को धारण करके हमारा पालन पोषण और हमारे सुख के साधन हमें बड़ी सुलभता से उपलब्ध करवाती है। हमारा भी अपनी धारण करने वाली राष्ट्र माता के प्रति कुछ दायित्व बनता है। परस्परतंत्रता के सिद्धांत के अन्तर्गत जिस प्रकार यह भूमि, पृथिवी, भारतमाता हमें धारण कर रही है हम भी वेद मंत्र में दिए गुणों को धारण करके और आपस में सौहार्द, समरसता और प्रेम के अटूट बंधन में बंधकर भारतमाता का पालन पोषण करें।

आइये अब इन गुणों पर एक-एक कर विचार करते हैं। बृहत् सत्यं यानि अटल सत्य निष्ठा। हमारी निष्ठा केवल अपने राष्ट्र के प्रति हो जो भूमि हमारा पालन पोषण कर रही है हम उसी के प्रति पूर्णतया समर्पित हों। यदि हम रहें तो यहाँ, खायें तो यहाँ लेकिन गुण गाएँ किसी अन्य के या फिर हमारी निष्ठा अपनी मातृभूमि के प्रति न होकर किसी अन्य देश के साथ हो तो हम कृतघ्नता-दोष के अपराधी, देशद्रोही कहलाएँगे। सरल शब्दों में हमारी अटल सत्य निष्ठा, सर्वस्व समर्पण केवल अपने राष्ट्र के प्रति होना चाहिए।

दूसरा गुण ऋतं अर्थात् यथार्थ का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। इस यथार्थ ज्ञान में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद समाया हुआ है यानि हमें अपनी संस्कृति का सम्पूर्ण ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। हमारी पुरातन सनातन वैदिक संस्कृति

जिसका ज्ञान सृष्टि के रचयिता परमपिता परमेश्वर ने इस सृष्टि में रहने वाले समस्त प्राणियों के लिए एक नियमावली के रूप में चार ऋषियों के माध्यम से दिया था अर्थात् इस वैदिक सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा में पूरी सृष्टि, पूरी धरती और इसके सभी देश आ जाते हैं। अन्य सभी मत मतान्तर तो किसी ना किसी स्वार्थ की भावना के वशीभूत प्रतिक्रियास्वरूप चलाए गए हैं। संस्कृति में मनुष्य के आंतरिक जीवन मूल्य और नैतिकता आती है जो सत्य होने के कारण सदा अपरिवर्तनीय रहते हैं। सभ्यता तो उस संस्कृति के बाह्य चिह्नों का नाम है। हम नागरिकों के लिए

अपने पुरातन सनातन वैदिक संस्कृति के यथार्थ ज्ञान का होना अत्यन्त आवश्यक है।

तीसरा गुण है उग्रं अर्थात् क्षात्र तेज जो कि देश की भौगोलिक सीमाओं की रक्षा और उसके विस्तार के लिए अत्यंत आवश्यक है। बलशाली राष्ट्र के लिए उसके प्रत्येक नागरिक में आत्मिक शारीरिक और सामाजिक बल का होना राष्ट्र की रक्षा के लिए आवश्यक है।

चौथा गुण तपः अर्थात् धर्म का पालन। मनुष्य के रूप में हमारा धर्म मनुष्यता है। मनुष्य होने के लिए आवश्यक गुण हैं मननशील व विचारवान होना, सभी से स्वात्मवत और यथायोग्य व्यवहार करना, निर्बल धर्मात्माओं का संरक्षण, दुष्टों को दण्ड देते हुए परोपकार के कार्य करना। हमारे धर्म का मूल सब सत्य विद्याओं का पुस्तक ईश्वरीय वाणी वेद है। अतः धर्म के पालन के लिए वेद ज्ञान होना भी आवश्यक है।

पाँचवां गुण है दीक्षा अर्थात् कार्य करने में दक्षता। **'योगः कर्मसुकौशलम्'** कहते हुए योगेश्वर कृष्ण ने कार्यों में कुशलता वा दक्षता को ही योग कहा है। अतः राष्ट्र की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए उसके नागरिकों को अपने अपने कार्यों में पूर्णतया कुशल व दक्ष होना आवश्यक है।

छठा गुण है ब्रह्म अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान। इसके अन्तर्गत हम मनुष्यों को जीवात्मा-परमात्मा के सत्यस्वरूप और सम्बन्धों का सत्य ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। उस एक सच्चिदानंदस्वरूप, निराकार, दयालु, न्यायकारी, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, अजर, अमर, अनुपम नित्यपवित्र और सृष्टिकर्त्ता ईश्वर का बोध होना अत्यन्त आवश्यक है। इससे हम धार्मिक आडम्बरों, मत-मतान्तरों के मकड़जाल से बचकर एक सूत्र में बंधकर पाखंडियों के शोषण से बच सकते हैं।

सातवां गुण यज्ञः जिसे देव दयानन्द ने हम सभी के लिए नित्यकर्म निर्धारित किया है और इस यज्ञ को मनुष्य अपने जीवन में धारण करे तथा अपने आत्मा में ज्ञान की अग्नि को उद्बुध करके प्रत्येक श्वास प्रति श्वास के साथ सद्कर्मों की आहुति देता रहे। इस यज्ञ में दान, त्याग व परोपकार की भावना समाहित होती है।

यदि राष्ट्र के नागरिक के रूप में इन गुणों को धारण करके परस्पर सौहार्द, समरसता और प्रेम के अटूट बंधन में बंध जाएं तो उन्नत राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं।

- नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'
६०२ जी.एच. ५३ सैक्टर-२०
पंचकूला, हरियाणा
चलभाष- ९४६७६०८६८६, ९८७८७४८८९९

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

अब मात्र कीमत ₹ 45 में

४००० रु. सैंकड़ा

शीघ्र मंगवाएँ

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

सत्य, दया और परोपकार,
की महिमा बड़ी अपार।
इनके बल पर ही बसता है,
खुशियों का संसार॥

सत्यार्थ सौरभ घर-घर पहुँचावें

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य (मंत्री-न्यास)   भंवरलाल गर्ग (कार्यालय मंत्री)   डॉ.अमृत लाल तापड़िया (उपमंत्री-न्यास)

कब कैसा नववर्ष हमारा?

भारत व्रत, पर्व, त्यौहारों का देश है जिसका हर दिन कोई न कोई विशिष्टता लिए हुए होता है। कोई किसी महापुरुष का जन्मदिवस है तो कोई पुण्य तिथि, कोई फसल से सम्बन्धित होता है तो कोई किसी खगोलीय घटना से सम्बन्धित। कोई समाज जीवन को प्रेरणा स्वरूप मनाया जाता है तो कोई किसी घटना विशेष को याद रख कर उससे सदैव ऊर्जावान बने रहने के लिए। एक बात तय है कि हमारे यहाँ कुछ भी यूँ ही नहीं मनाया जाता बल्कि, प्रत्येक उत्सव-त्यौहार का कोई न कोई एक सामाजिक, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक या राष्ट्रीय कारण अवश्य होता है। किन्तु हाँ! कालान्तर में हमारे देश में कुछ पर्व त्यौहार या परम्पराएँ ऐसी भी घुस आईं जो हमारे इन सिद्धान्तों से कभी मेल नहीं खातीं फिर भी हमने उन्हें अपना लिया।

अंग्रेजी कैलेंडर के प्रथम दिवस यानी एक जनवरी के आने के एक सप्ताह पहले ही क्रिसमस और नए साल के आगमन की तैयारियों का जोश चारों ओर नजर आने लगता है। इस जोश में अधिकतर लोग अपना होश भी खो बैठते हैं। करोड़ों रुपये नववर्ष की तैयारियों में लगा दिए जाते हैं। होटल, रेस्त्रां, पब इत्यादि अपने-अपने ढंग से इसके आगमन की तैयारियाँ करने लगते हैं। 'हैप्पी न्यू ईयर' के बैनर, होर्डिंग्स, पोस्टर और कार्डों के साथ शराब की दुकानों की भी खूब चांदी कटने लगती है। कहीं कहीं तो जाम से जाम इतने टकराते हैं कि मनुष्य मनुष्यों से तथा गाड़ियाँ गाडियों से भिड़ने लगती हैं और घटनाएँ दुर्घटनाओं में बदलने में देर नहीं लगती। हम भारतीय भी पश्चिमी अंधानुकरण में इतने सराबोर हो जाते हैं कि उचित-अनुचित का बोध त्याग अपनी सभी सांस्कृतिक मर्यादाओं को तिलाञ्जलि दे बैठते हैं। पता ही नहीं लगता कि कौन अपना है और कौन पराया। क्या यही है हमारी संस्कृति या त्यौहार मनाने की परम्परा !

जिस प्रकार ईस्वी संवत् ईसा से सम्बन्धित है, ठीक उसी प्रकार, हिजरी संवत् का सम्बन्ध मुस्लिम जगत् और हजरत मुहम्मद साहब से है। किन्तु भारतीय काल गणना के प्रमुख स्तम्भ विक्रमी संवत् का सम्बन्ध किसी भी धर्म से न होकर सारे विश्व की प्रकृति, खगोल सिद्धान्त और ब्रह्माण्ड के ग्रहों व नक्षत्रों से है। इसलिए भारतीय कालगणना पंथनिरपेक्ष होने के साथ सृष्टि की रचना व राष्ट्र की गौरवशाली परम्पराओं को दर्शाती है। इतना ही नहीं, ब्रह्माण्ड के सबसे पुरातन ग्रंथ वेदों में भी इसका वर्णन है। नव संवत् यानी संवत्सरों का वर्णन यजुर्वेद के २७वें व ३०वें अध्याय के मंत्र क्रमांक क्रमशः ४५ व १५ में विस्तार से दिया गया है। विश्व में सौरमण्डल के ग्रहों व नक्षत्रों की चाल व निरन्तर बदलती उनकी स्थिति पर ही हमारे दिन, महीने, साल और उनके सूक्ष्मतम भाग आधारित होते हैं। भारतीय संस्कृति श्रेष्ठता की उपासक है। जो प्रसंग समाज में हर्ष व उल्लास जगाते हुए एक सही दिशा प्रदान करते हैं, उन सभी को हम उत्सव के रूप में मनाते हैं। राष्ट्र के स्वाभिमान व देश प्रेम को जगाने वाले अनेक प्रसंग चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से जुड़े हुए हैं। यह वह दिन है, जिस दिन से भारतीय नव वर्ष प्रारम्भ होता है। यह सामान्यतः अंग्रेजी कैलेंडर के मार्च या अप्रैल माह में पड़ता है। मान्यता है कि चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के सूर्योदय से ही ब्रह्मा जी ने जगत् की रचना प्रारम्भ की। भगवान श्री राम, चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य और धर्मराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था। शक्ति और भक्ति के नौ दिन अर्थात् नवरात्र स्थापना का पहला दिन यही है। आर्यसमाज स्थापना दिवस,

सिख परंपरा के द्वितीय गुरु अंगददेव, संत झूलेलाल व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार का जन्म भी चैत्र शु. प्रतिपदा के दिन ही हुआ था। यदि हम इस दिन के प्राकृतिक महत्व की बात करें तो वसंत ऋतु का आरम्भ वर्ष-प्रतिपदा से ही होता है। जो उल्लास, उमंग, खुशी तथा चारों तरफ पुष्पों की सुगन्धि से भरी होती है। फसल पकने का प्रारम्भ यानि किसान की मेहनत का फल

मिलने का भी यही समय होता है।

क्या एक जनवरी के साथ ऐसा एक भी प्रसंग जुड़ा है, जिससे राष्ट्र प्रेम जाग सके, स्वाभिमान जाग सके या श्रेष्ठ होने का भाव जाग सके? मैकाले की अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का ही नतीजा है कि आज हमने न सिर्फ अंग्रेजी बोलने में हिन्दी से ज्यादा गर्व महसूस किया बल्कि अपने प्यारे भारत का नाम संविधान में 'इंडिया दैट इज भारत' तक रख दिया। इसके पीछे यही धारणा थी कि भारत को भूल कर इंडिया को याद रखो क्योंकि पुरातन नाम से हस्तिनापुर व उसकी प्राचीन सभ्यता और परम्परा याद आएगी।

राष्ट्रीय चेतना के ऋषि स्वामी विवेकानन्द ने कहा था, 'यदि हमें गौरव से जीने का भाव जगाना है, अपने अन्तर्मन में राष्ट्र भक्ति के बीज को पल्लवित करना है तो राष्ट्रीय तिथियों का आश्रय लेना होगा। गुलाम बनाए रखने वाले परकीयों की दिनांकों पर आश्रित रहने वाला अपना आत्म गौरव खो बैठता है।' इसी प्रकार महात्मा गांधी ने १९४४ की हरिजन पत्रिका में लिखा था, 'स्वराज्य का अर्थ है- स्व-संस्कृति, स्व-धर्म एवं स्व-परम्पराओं का हृदय से निर्वाह करना। पराया धन और पराई परम्परा को अपनाने वाला व्यक्ति न ईमानदार होता है न आस्थावान।'

आवश्यक है कि हम अपने नववर्ष का उल्लास के साथ स्वागत करें' न कि अर्धरात्रि तक मदिरापान कर हंगामा करते हुए, नाइट क्लबों में अपना जीवन गुजारें। यदि इस तरह का जीवन जीते हुए हम लोग उन्मत्त होकर अपने ही स्वास्थ्य, धन-बल और आयु का विनाश करते हुए नव वर्ष के स्वागत का उपक्रम करेंगे, तो यह न केवल स्वयं के लिए बल्कि अपनी भावी पीढ़ी, समाज और राष्ट्र के लिए भी घातक होगा।

हम नववर्ष के दिन कुछ ऐसे कार्य कर सकते हैं, जिनसे समाज में सुख, शान्ति, पारस्परिक प्रेम तथा एकता के भाव उत्पन्न हों। जैसे सर्वप्रथम प्रभु आराधना, हवन, यज्ञ, संध्या वन्दनोपरांत हम गरीबों और रोगग्रस्त व्यक्तियों की सहायता करने, वातावरण को प्रदूषण से मुक्त रखने, वृक्षारोपण करने, समाज में प्यार और विश्वास बढ़ाने, शिक्षा का प्रसार करने तथा सामाजिक कुरीतियाँ दूर करने जैसे कार्यों के लिए संकल्प ले कर इस ओर पहल कर सकते हैं। आइए! विदेशी दासत्व को त्याग स्वदेशी अपनाएँ और गर्व के साथ भारतीय नववर्ष यानी विक्रमी संवत् को ही मनाएँ तथा इसका अधिक से अधिक प्रचार करे।

-विनोद बंसल
(राष्ट्रीय प्रवक्ता 'विहिप')

नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

बहुत सारी ऐसी बातें जिससे मैं अनभिज्ञ था यहाँ आने के पश्चात् मुझे पता चला। यहाँ पर आने के बाद मैं ऐसा सोचता हूँ कि मेरा भारतवर्ष कितना महान् है जहाँ कितने महापुरुषों ने जन्म लिया। मैं इसे और भी अगली बार देखने व समझने का प्रयास करूँगा।

– सुनील पांचाल

नवलखा महल में महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के सिद्धान्तों के बारे में जानकर अतीव हर्ष हुआ। मैं आचार्य सानन्द जी जो मेरे जीवन साथी हैं के साथ यहाँ आई। इस चित्रदीर्घा को देखकर आर्य समाज व सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ने और समझने की और तीव्र इच्छा है। महर्षि दयानन्द जी का कार्य जो वेदों को विश्व में फैलाने का है वह मेरा निश्चय आज ऋषि की कृपा से और तीव्र हो गया है। मैं यहाँ आकर धन्य हूँ। महर्षि आपका यह उपकार......... जहाँ निशब्द है।

– ललिता आर्या

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा

ग्रीन लेडी ऑफ बिहार

समाज की बेहतरी के लिये अच्छी सोच और अच्छी नीयत की जरूरत होती है। तभी तो चौथी क्लास तक पढ़ने वाली एक महिला आज दूसरों के लिये मिसाल है। उनके काम की बदौलत लोग ना सिर्फ उनको पर्यावरण का पहरेदार मानते हैं, बल्कि ये उनकी कोशिशों का ही असर है कि बिहार के कई जिलों में सालों से सूखा नहीं पड़ा है। इतना ही नहीं महिलाओं को स्वावलम्बी बनाने के लिये उन्होंने महिलाओं को एकजुट कर 'स्वयं सहायता समूह' की स्थापना की। इस वजह से जो महिलाएँ सालों पहले कर्जदार के चंगुल में फंसी रहती थीं, वो आज अपनी बचत के जरिये आत्मनिर्भर बन रही हैं। अपनी मेहनत, लगन और कुछ कर गुजरने के जुनून के कारण बिहार के मुंगेर जिले में रहने वाली जया देवी को लोग 'ग्रीन लेडी आफ बिहार' (Green Lady of Bihar) के नाम से जानते हैं।

३४ साल की जया देवी को बचपन से ही पढ़ाई का शौक था, लेकिन तब उनके गाँव में लड़कियों को ज्यादा पढ़ाया नहीं जाता था और उनकी जल्दी शादी कर दी जाती थी। यही वजह रही कि उनके पिता ने भी १२ साल की उम्र में उनका विवाह जया देवी से दोगुनी उम्र के व्यक्ति से कर दिया। विवाह के बाद वो अपने ससुराल आ गईं तब उनके पति मजदूरी करते थे। जया देवी का परिवार बढ़ चुका था, लेकिन आमदनी उस हिसाब से नहीं बढ़ी थी लिहाजा उनके पति काम की तलाश में गाँव से शहर आ गये। इस बीच जया देवी के पिता का देहान्त हो चुका था। तब जया देवी अपने बच्चों के साथ मायके में आकर रहने लगीं। यहाँ आकर उन्होंने तय किया कि वो घर का खर्च चलाने के लिये कुछ काम करेंगी लेकिन गाँव के हालात पहले जैसे थे। लड़कियों को अब भी पढ़ने नहीं दिया जा रहा था। ये एक नक्सल प्रभावित इलाका था इस कारण लोग अन्याय के खिलाफ आवाज भी नहीं उठा पाते थे। तब जया ने सोचा कि किसी न किसी को तो आवाज उठानी ही पड़ेगी, क्योंकि अगर आवाज नहीं उठाई गई तो लड़कियों और महिलाओं का इसी तरह शोषण होता रहेगा।

जया देवी ने समाज में बदलाव लाने के लिये सिस्टर आजिया से सम्पर्क किया और उनके साथ मिलकर महिलाओं और लड़कियों के साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई। शुरूआत में जया को इस तरह के काम करने का कोई अनुभव नहीं था। इसलिए उन्होंने सबसे पहले 'स्वयं सहायता समूह' के काम करने के तरीके के बारे में १५ दिन की ट्रेनिंग ली। उसके बाद उन्होंने महिलाओं को समझाया कि वो रोज जितना खाना बनाती हैं उसमें से १ मुट्ठी अनाज वो अलग निकाल कर रख दें इस तरह हफ्ते में १ दिन उनको अनाज नहीं खरीदना पड़ेगा और इस तरह वो कुछ पैसे बचा सकेंगी। इसी तरह जया देवी ने महिलाओं को सब्जी और दूसरे सामान खरीदने पर भी कैसे पैसे बचाये जा सकते हैं, इसके बारे में बताया। इस तरह जया देवी के साथ जुड़ी ये महिलाएँ हर हफ्ते ५ रुपये बचाकर उनको देती थीं। धीरे-धीरे जब उनके काम का विस्तार होता गया तो आसपास के दूसरे गाँवों की महिलाएँ भी उनसे जुड़ने लगीं। जया ने 'इंडिया मंत्र' को बताया कि 'शुरूआत में जब मैं

दूसरी महिलाओं को अपने काम के बारे में बताने जाती थी तो वो अपने घर का दरवाजा भी नहीं खोलती थीं। तब मैं घंटों उनके घर के बाहर बैठी रहती थी। फिर जब वो महिला घर से बाहर निकलती तो उनको समझाती थी कि क्यों मैं तुम लोगों को 'स्वयं सहायता समूह' में शामिल होने के लिए कह रहीं हूँ।' जब पहली बार उनके 'स्वयं सहायता समूह' में २० हजार रुपये जमा हो गये तो उन्होंने उस राशि का १० प्रतिशत निकालकर अपने पास रख लिया और शेष राशि को बैंक में जमा कर दिया। 'स्वयं सहायता समूह' बनने के बाद जो भी महिलाएँ इसकी सदस्य बनीं उनको अपने जरूरी खर्चों के लिए समूह से ही कम ब्याज पर पैसा मिलने लगा। इस कारण वो साहूकारों से मिलने वाले कर्ज के चंगुल में फंसने से बच गईं, क्योंकि पहले ये महिलाएँ जब साहूकारों के पास जाती थीं तो वो उनको ऊँची ब्याज दर पर पैसा देते थे। कई बार तो ब्याज मूल धन से भी ज्यादा हो जाता था। जया देवी भले ही पढ़ाई नहीं कर पाई हों लेकिन वो जानती थीं कि किसी के जीवन में शिक्षा कितनी जरूरी होती है। इसलिये उन्होंने अपने गाँव में शिक्षा का प्रसार करने के लिए साक्षरता अभियान (literacy campaign) चलाया। इसके लिए उन्होंने अखबारों और प्रचार के दूसरे तरीकों के जरिये लोगों से बच्चों की पुरानी किताबें माँगी और उन किताबों को सराधी गाँव के बच्चों के बीच बाँटने का काम किया। ये उन्हीं की कोशिशों का असर है कि आज ना सिर्फ सराधी गाँव बल्कि आसपास के दूसरे गाँव के सभी बच्चे स्कूल जाते हैं। इसके अलावा उन्होंने महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों के जरिये शिक्षित किया। यही वजह है कि कल तक जो महिलाएँ अंगूठा लगातीं थीं, वो आज हस्ताक्षर करती हैं।

जया देवी का सराधी गाँव हर साल सूखे के कारण फसलों के बर्बाद होने से परेशान रहता था। ऐसे में जया देवी ने इस समस्या का तोड़ निकालने का फैसला लिया और एक दिन वो एग्रीकल्चर टेक्नोलॉजी मैनेजमेंट एजेंसी (Agriculture technology management agency) के गवर्निंग सदस्य किशोर जायसवाल से मिलीं। उन्होंने जया को सूखे का कारण और बारिश के पानी को कैसे बचाया जाये? इसके बारे में बताया। किशोर जायसवाल ने उनको बंजर जमीन (barren ground) पर पेड़ लगाने के लिए कहा। साथ ही जया देवी को रेन वाटर हार्वेस्टिंग (rainwater harvesting) की ट्रेनिंग दी। इसके बाद जया देवी ने गाँव वालों की मदद से ६ तालाब बनवाये और पुराने तालाबों की मरम्मत की। इसके अलावा उन्होंने बंजर जमीनों में फलदार पेड़ लगाये। इन पेड़ों में उन्होंने आम, लीची, अमरूद और जामुन के पेड़ लगाये। जिससे लोग उन फलों को बेचकर अपनी आमदनी को भी बढ़ा सकें। इस तरह पहले जिस जमीन में साल भर में एक फसल लेना भी किसानों के लिए मुश्किल हो रहा था, वहाँ पर आज वो रबी और खरीफ की दो-दो फसलें ले रहे हैं।

ये जया देवी की कोशिशों का असर है कि आस पास के गाँवों में पानी का स्तर ऊपर आ गया है। साथ ही जो जमीन कल तक ऊसर थी वो भी अब उपजाऊ में बदल गई है। धीरे-धीरे उन्होंने अपने इस अभियान को दूसरे गाँवो के अलावा बिहार के कई जिलों तक पहुँचाया। इस कारण दूसरे गाँव भी हरे-भरे हो गये। जया देवी कहती हैं कि 'किशोर जी मेरे गुरु हैं क्योंकि मैं तो एक मामूली औरत थी लेकिन उनके मार्गदर्शन से ही मैं पर्यावरण को संरक्षित करने का काम कर सकी।'

जया देवी ने अपने काम से दिखा दिया है कि अगर इंसान ठान ले तो कोई भी काम मुश्किल नहीं होता। जरुरत होती है तो सिर्फ इच्छा शक्ति की। जया देवी के इन कामों को देखते हुए भारत सरकार ने उनको 'राष्ट्रीय युवा पुरस्कार' से सम्मानित किया है। इसके अलावा भी उन्हें कई दूसरे सम्मान मिल चुके हैं।

साभार- इण्डिया-मन्त्र

विकास वादियों से कुछ प्रश्न

शारीरिक विकास

१. विकासवादी अमीबा से लेकर विकसित होकर बन्दर पुनः शनैः-शनैः मनुष्य की उत्पत्ति मानते हैं। वे बताएँ कि अमीबा की उत्पत्ति कैसे हुई?

२. यदि किसी अन्य ग्रह से जीवन आया, तो वहाँ उत्पत्ति कैसे हुई? जब वहाँ उत्पत्ति हो सकती है, तब इस पृथ्वी पर क्यों नहीं हो सकती?

३. यदि अमीबा की उत्पत्ति रासायनिक क्रियाओं से किसी ग्रह पर हुई, तब मनुष्य के शुक्राणु व अण्डाणु की उत्पत्ति इसी प्रकार क्यों नहीं हो सकती?

४. उड़ने की आवश्यकता होने पर प्राणियों के पंख आने की बात कही जाती है परन्तु मनुष्य जब से उत्पन्न हुआ, उड़ने हेतु हवाई जहाज बनाने का प्रयत्न करता रहा है, परन्तु उसके पंख क्यों नहीं उगे? यदि ऐसा होता, तो हवाई जहाज के अविष्कार की आवश्यकता नहीं होती।

५. शीत प्रदेशों में शरीर पर लम्बे बाल विकसित होने की बात कही जाती है, तब शीत प्रधान देशों में होने वाले मनुष्यों के रीछ जैसे बाल क्यों नहीं उगे? उसे कम्बल आदि की आवश्यकता क्यों पड़ी?

६. जिराफ की गर्दन इसलिए लम्बी हुई कि वह धरती पर घास सूख जाने पर ऊपर पेड़ों की पत्तियां गर्दन ऊँची करके खाता था। जरा बताएं कि कितने वर्ष तक नीचे सूखा और पेड़ों की पत्तियां हरी रहीं? फिर बकरी आज भी पेड़ों पर दो पैर रखकर पत्तियां खाती है, उसकी गर्दन लम्बी क्यों नहीं हुई?

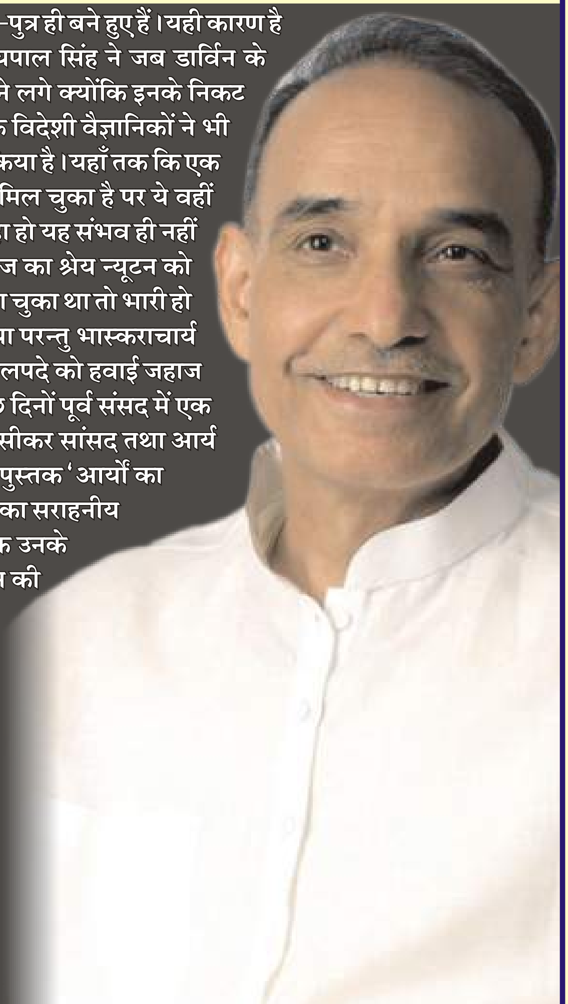

बिडम्वना है कि आज भी प्रायः भारतीय बुद्धिजीवी मैकाले के मानस-पुत्र ही बने हुए हैं। यही कारण है कि वैदिक विद्वान् एवं मनीषी, मानव संसाधन राज्य मंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह ने जब डार्विन के सिद्धान्त को मिथ्या निरूपित किया तो ऐसे बुद्धिजीवी चीत्कार करने लगे क्योंकि इनके निकट केवल पाश्चात्य विद्वानों के कथन माननीय हैं। परन्तु ये भूल गए कि विदेशी वैज्ञानिकों ने भी डार्विन की थ्योरी को एक बार नहीं अनेक बार प्रश्नों के घेरे में खड़ा किया है। यहाँ तक कि एक पाश्चात्य दार्शनिक को एंटी डार्विन थ्योरी के लिए नोबल पुरस्कार मिल चुका है पर ये वहीं खड़े हैं क्योंकि इनकी नजर में भारत में कुछ महत्वपूर्ण खोजा या कहा हो यह संभव ही नहीं है। श्री वासुदेव देवनानी ने जब कहा कि गुरुत्वाकर्षण शक्तिकी खोज का श्रेय न्यूटन को दिया जाता है जबकि उससे पूर्व भारत में यह तथ्य प्रतिपादित किया जा चुका था तो भारी हो हल्ला इन तथाकथित बुद्धिजीवियों ने मचाया। हो हल्ला तो मचाया परन्तु भास्कराचार्य का सिद्धान्त शिरोमणि उठाकर नहीं देखा। इनको तो शिवकर बापू तलपदे को हवाई जहाज के आविष्कारक के रूप में प्रस्तुत किया जाना नागवार गुजरेगा। कुछ दिनों पूर्व संसद में एक नेताजी द्वारा बयान दिया गया कि आर्य भारत में बाहर से आये तब सीकर सांसद तथा आर्य संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द जी ने स्वामी विद्यानन्द जी की अप्रतिम पुस्तक 'आर्यों का आदिदेश' सभी सांसदों को वितरित कर उन तक सत्य संप्रेषित करने का सराहनीय कार्य किया। ऐसे वातावरण में आज के युवा को कैसे ज्ञात होगा कि उनके पूर्वजों ने संसार में अपने ज्ञान विज्ञान का लोहा मनवाया था। डार्विन की परिकल्पना में तो इतने छेद हैं कि पानी की एक बून्द न ठहर सके। पाश्चात्य जगत् में ही अनेकों प्रबुद्धों ने डार्विन की परिकल्पना को असत्य सिद्ध किया है। अतः हमने निश्चय किया है कि इस सम्बन्ध में तर्कपूर्ण सामग्री आज के युवा के लिए सत्यार्थ सौरभ में दी जाय। इस विषय के सभी विद्वान् लेखकों से लेख आमंत्रित हैं। इस अंक में भारत के प्रकाण्ड वैदिक वैज्ञानिक आचार्य अग्निव्रत जी नैष्ठिक, जिन्होंने अपने 'ऐतरेय ब्राह्मण के वैज्ञानिक भाष्य' द्वारा सृष्टि रचना की अत्यन्त गूढ़ समस्याओं को वेदों के आधार पर सफलता पूर्वक सुलझाकर पाश्चात्यों द्वारा स्थापित एतद् विषयक सिद्धान्तों को मिथ्या सिद्ध किया है, के द्वारा डार्विनिज्म पर उठाये गंभीर प्रश्नों को प्रस्तुत किया जा रहा है। पाठक गण अपनी प्रतिक्रिया से अवगत करावें। -अशोक आर्य

सत्य कथन- श्री सत्यपाल जी का

३. गाय, भैंस, घोड़ा, भेड़, बकरी, ऊँट, हाथी करोड़ों वर्षों से मनुष्य के पालतू पशु रहे हैं पुनरपि उन्होंने न मानवीय भाषा सीखी और न मानवीय व्यवहार, तब मनुष्य में ही यह विकास कहाँ से हुआ?

४. दीपक से जलता पतंगा करोड़ों वर्षों में इतना भी बौद्धिक विकास नहीं कर सका कि स्वयं को जलने से रोक ले, और मानव बन्दर से इतना बुद्धिमान् बन गया कि मंगल की यात्रा करने को तैयार है? क्या इतना जानने की बुद्धि भी विकासवादियों में विकसित नहीं हुई ? पहले सपेरा सांप को बीन बजाकर पकड़ लेता था और आज भी वैसा ही करता है परन्तु सांप में इतने ज्ञान का विकास भी नहीं हुआ कि वह सपेरे की पकड़ में नहीं आये।

७. बंदर के पूँछ गायब होकर मनुष्य बन गया। जरा कोई बताये कि बंदर की पूंछ कैसे गायब हुई? क्या उसने पूँछ का उपयोग करना बंद कर दिया? कोई बताये कि बन्दर पूँछ का क्या उपयोग करता है और वह उपयोग उसने क्यों बंद किया? यदि ऐसा ही है तो मनुष्य के भी नाक, कान गायब होकर छिद्र ही रह सकते थे। मनुष्य लाखों वर्षों से से बाल और नाखून काटता आ रहा है, तब भी बराबर वापिस उगते आ रहे हैं, ऐसा क्यों?

८. सभी बंदरों का विकास होकर मानव क्यों नहीं बने? कुछ तो अमीबा के रूप में ही अब तक चले आ रहे हैं, और हम मनुष्य बन गये, यह क्या है?

९. कहते हैं कि सांपों के पहले पैर होते थे, धीरे-धीरे वे घिस कर गायब हो गये। जरा विचारो कि पैर कैसे गायब हुए, जबकि अन्य सभी पैर वाले प्राणियों के पैर बिल्कुल नहीं घिसे।

१०. बिना अस्थि वाले जानवरों से अस्थि वाले जानवर कैसे बने? उन्हें अस्थियों की क्या आवश्यकता पड़ी?

११. बंदर व मनुष्य के बीच बनने वाले प्राणियों की शृंखला कहाँ गई?

१२. विकास मनुष्य पर जाकर क्यों रुक गया? किसने इसे विराम दिया? क्या उसे विकास की कोई आवश्यकता नहीं है?

बौद्धिक व भाषा सम्बन्धी विकास

१. कहते हैं कि मानव ने धीरे-धीरे बुद्धि का विकास कर लिया, तब प्रश्न है कि बन्दर व अन्य प्राणियों में बौद्धिक विकास क्यों नहीं हुआ?

२. मानव के जन्म के समय इस धरती पर केवल पशु पक्षी ही थे, तब उसने उनका ही व्यवहार क्यों नहीं सीखा? मानवीय व्यवहार का विकास कैसे हुआ? करोड़ों वनवासियों में अब तक विशेष बौद्धिक विकास क्यों नहीं हुआ?

५. पहले मनुष्य बल, स्मरण शक्ति एवं शारीरिक प्रतिरोधी क्षमता की दृष्टि से वर्तमान की अपेक्षा बहुत अधिक समृद्ध था, आज यह ह्रास क्यों हुआ, जबकि विकास होना चाहिए था?

६. संस्कृत भाषा, जो सर्वाधिक प्राचीन भाषा है, उसका व्याकरण वर्तमान विश्व की सभी भाषाओं की अपेक्षा अतीव समृद्ध व व्यवस्थित है, तब भाषा की दृष्टि से विकास के स्थान पर ह्रास क्यों हुआ?

७. प्राचीन ऋषियों के ग्रन्थों में भरे विज्ञान के सम्मुख वर्तमान विज्ञान अनेक दृष्टि से पीछे है, यह मैं अभी सिद्ध करने वाला हूँ, तब यह विज्ञान का ह्रास कैसे हुआ? पहले केवल अन्तःप्रज्ञा से सृष्टि का ज्ञान ऋषि कर लेते थे, तब आज वह ज्ञान अनेकों संसाधनों के द्वारा भी नहीं होता। यह यह उलटा क्रम कैसे हुआ?

भला विचारें कि यदि पशु पक्षियों में बौद्धिक विकास हो जाता, तो एक भी पशु पक्षी मनष्य के वश में नहीं आता। यह कैसी अज्ञानता भरी सोच है, जो यह मानती है कि पशु पक्षियों में बौद्धिक विकास नहीं होता परन्तु शारीरिक विकास होकर उन्हें मनुष्य में बदल देता है और मनुष्यों में शारीरिक विकास नहीं होकर केवल भाषा व बौद्धिक विकास ही होता है। इसका कारण क्या विकासवादी मुझे बताएँगे।

आज विकासवाद की भाषा बोलने वाले अथवा पौराणिक बन्धु श्री हनुमान् जी को बन्दर बताएं, उन्हें वाल्मीकीय रामायण का गम्भीर ज्ञान नहीं है। वस्तुतः वानर, ऋक्ष, गृध, किन्नर, असुर, देव, नाग आदि मनुष्य जाति के ही नाना वर्ग थे। ऐतिहासिक ग्रन्थों में प्रक्षेपों (मिलावट) को पहचानना

परिश्रमसाध्य व बुद्धिगम्य कार्य है।

उधर जो प्रबुद्धजन किसी वैज्ञानिक पत्रिका में पेपर प्रकाशित होने को ही प्रामाणिकता की कसौटी मानते हैं, उनसे मेरा अति संक्षिप्त विनम्र निवेदन है-

१. बिग बैंग थ्योरी व इसके विरुद्ध अनादि ब्रह्माण्ड थ्योरी, दोनों ही पक्षों के पत्र इन पत्रिकाओं में छपते हैं, तब कौन-सी थ्योरी को सत्य मानें?

२. ब्लैक होल व इसके विरुद्ध ब्लैक होल न होने की थ्योरीज़ इन पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं, तब किसे सत्य मानें?

३. ब्रह्माण्ड का प्रसार व इसके प्रसार न होने की थ्योरीज़ दोनों ही प्रकाशित हैं, तब किसे सत्य मानें?

ऐसे अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। इस कारण यह आवश्यक नहीं है कि हमें एक वर्गविशेष से सत्यता का प्रमाण लेना अनिवार्य हो? हमारी वैदिक एवं भारतीय दृष्टि में उचित तर्क, पवित्र गम्भीर ऊहा एवं योगसाधना (व्यायाम नहीं) से प्राप्त निष्कर्ष वर्तमान संसाधनों के द्वारा किये गये प्रयोगों, प्रक्षेपणों व गणित से अधिक प्रामाणिक होते हैं। यदि प्रयोग, प्रेक्षण व गणित के साथ सुतर्क, ऊहा का साथ न हो, तो वैज्ञानिकों का सम्पूर्ण श्रम व्यर्थ हो सकता है। यही कारण है कि प्रयोग, परीक्षणों, प्रेक्षणों व गणित को आधार मानने वाले तथा इन संसाधनों पर प्रतिवर्ष खरबों डॉलर खर्च करने वाले विज्ञान के क्षेत्र में नाना विरोधी थ्योरीज़ मनमाने ढंग से फल-फूल रही हैं और सभी अपने को ही सत्य कह रही हैं। यदि विज्ञान सर्वत्र गणित व प्रयोगों को आधार मानता है, तब क्या कोई विकासवाद पर गणित व प्रयोगों का आश्रय लेकर दिखाएगा?

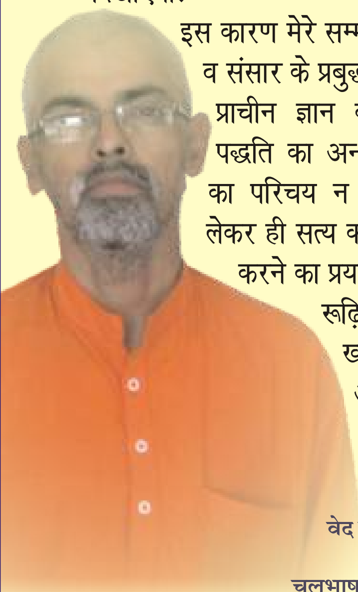

इस कारण मेरे सम्मान के योग्य वैज्ञानिकों एवं देश व संसार के प्रबुद्ध जनों से अनुरोध है कि प्रत्येक प्राचीन ज्ञान का अन्धविरोध तथा वर्तमान पद्धति का अन्धानुकरण कर बौद्धिक दासत्व का परिचय न दें। तार्किक दृष्टि का सहारा लेकर ही सत्य का ग्रहण व असत्य का परित्याग करने का प्रयास करें। हाँ, अपने साम्प्रदायिक रूढ़िवादी सोच को विज्ञान के समक्ष खड़े करने का प्रयास करना अवश्य आपत्तिजनक है।

- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
वैदिक वैज्ञानिक
अध्यक्ष स्वस्ति पन्था न्यास
वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम, भीनमाल
जि. जालोर (राज.)
चलभाष- ९४१४१८२१७३, ७४२४९८०९६३

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्यॉंमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

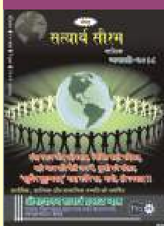

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

Hanuman Jayanti pe khas

हनुमान वेद के विद्वान् थे

श्री राम हनुमान का हृदय से सम्मान करते थे जब श्री राम को वनवास हो गया तो उसी समय उनकी प्रिय सीता का हरण हो गया था, जिनकी खोज करते हुए राम व लक्ष्मण किष्किन्धा की सीमा पर पहुँचे तब वहाँ के राजा सुग्रीव थे। उन्होंने मंत्री हनुमान को उन दोनों का परिचय लेने हेतु भेजा। हनुमान जी ने वहाँ जाकर देखा तो कहने लगे आपने यज्ञोपवीत धारण किया हुआ है, पीत वस्त्र धारण किए हैं। लगता है आप ब्राह्मण (साधु) हैं परन्तु मैं भ्रमित हूँ क्योंकि आपने कन्धे पर धनुष बाण धारण किया है इससे प्रतीत होता है कि आप क्षत्रिय हैं कृपा कर अपना परिचय देवें।

इस पर श्री राम ने नम्रतापूर्वक निवेदन किया कि हम अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र हैं। हमें वनवास मिला है और मेरी प्रिय सीता का अपहरण हो गया है... जब श्री राम ने हनुमान से अपनी समस्या बता दी तो हनुमान परिचय जानने हेतु लक्ष्मण की ओर दृष्टि करने लगे तब इस स्थिति को श्री राम समझ गए और लक्ष्मण की ओर देख कर बोले

नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिण:।
नासामवेदविदुष:शक्यमेवं प्रभाषितुम्।। – कि. का. वा. रा. २/२८

अर्थात् हे लक्ष्मण यह हनुमान हैं, चारों वेदों के विद्वान् हैं, व्याकरण के जानने वाले हैं, इनकी भाषा संस्कृत है, इनसे संयम में रहते हुए बात करना।

यहाँ स्पष्ट है कि हनुमान उच्च कोटि के विद्वान् थे, वेदों के ज्ञाता थे, व्याकरण अच्छा था, भाषा नियमित थी व संयमित बोलते थे न कि तर्कहीन अतः ऐसा व्यक्ति कितना महान् होगा ऐसा हम विचार ही कर सकते हैं।

आज लोगों में भ्रान्ति है कि हनुमान बंदर थे। यह एमदम असत्य है क्योंकि बन्दर कभी शब्दों का उच्चारण कर ही नहीं सकता। हनुमान जी विशुद्ध संस्कृत भाषा व व्याकरण का प्रयोग करते थे। वह मनुष्य ही थे क्योंकि उनकी माता अञ्जनी व पिता पवन मनुष्य थे और मनुष्यों से बन्दर जन्म नहीं लेते यह सृष्टि का नियम है।

हनुमान के बन्दर की भाँति पूँछ भी नहीं थी। यह हनुमान के साथ ही नहीं अन्य ऋषि मुनियों के साथ भी अन्याय किया गया है। उन्हें मछली, छिपकली, मकड़ी आदि से उत्पन्न (पुराणों में) बताया गया है। प्रक्षिप्त विषयों से अलग हटकर इन ग्रन्थों, इतिहास पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए।

हनुमान के पूँछ न होकर हो सकता है वानर जाति अपना राष्ट्रीय ध्वज विशेष रूप से बना पीठ पीछे इसलिए बांध लेते हों जिससे कार्य करने, युद्ध आदि में हाथ खाली रहें, और वे अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग कर सकें।

– डॉ. विजेन्द्र पाल सिंह
चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा- २०३१३१

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश
अब ४००० रु. सैकड़ा
सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब
एक हजार प्रतियों के लिए १५००० रु.

आपकी लोकप्रिय पत्रिका सत्यार्थ सौरभ को सम्बल प्रदान करने हेतु **आशा आर्या नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार)** ने संरक्षक सदस्यता (₹११०००) ग्रहण की है। अनेकशः धन्यवाद। – भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा जनपद आगरा के तत्वावधान में २३ व २४ दिसम्बर, १७ को श्री केदार नाथ सेकसरिया आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, बेलनगंज, आगरा में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द स्मृति एवं बलिदान दिवस समारोह कार्यक्रम बड़ी ही धूमधाम से सम्पन्न हुआ।
कार्यक्रम में मुख्यामंत्रित विद्वान् आचार्य सत्यजित् आर्य जी (अजमेर वाले), आचार्य शिवदत्त पाण्डे (गुरुकुल- सुल्तानपुर), श्री दिनेश पथिक (नई दिल्ली), श्री सुकान्त आर्य (कासगंज) थे। सम्पूर्ण कार्यक्रम का मंच संचालन विजयपाल सिंह चौहान जी ने किया।

आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन

उच्चशिक्षित, उच्च आर्यावर्त्तीय आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन सम्पन्न। मंच पर डॉक्टर, इंजीनियर, सीए आदि लड़के-लड़कियों ने दिया अपना-अपना परिचय। महाशय धर्मपाल जी

ने कहा कि 'वैदिक संस्कारों से युक्त आर्य परिवारों का निर्माण ही आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य है।
श्री धर्मपाल आर्य प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने कहा कि आर्यसमाज के विवाह सम्बन्धी विचार महर्षि दयानन्द के वैदिक चिन्तन का साक्षात् स्वरूप है।
विनय आर्य महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने कहा कि आर्यसमाज के ये परिचय सम्मेलन तदनुरूप लक्ष्य की पूर्ति में सहायक होंगे। - अर्जुनदेव चड्ढा

रोहतक के कई गाँवों में पहुँची प्रान्तीय जन चेतना यात्रा

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा, बेटी बचाओ अभियान व युवा निर्माण अभियान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित प्रान्तीय जन चेतनायात्रा ७ फरवरी २०१८ को रोहतक जिले के फरमाना के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल, आर्यसमाज फरमाना, के. सी. एम. पब्लिक स्कूल निंदाना, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय निंदाना, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल लाखनमाजरा, चिड़ी, कथूरा होती हुई सोनीपत जिले के आहुलाना गाँव में प्रवेश कर गई।
यात्रा का नेतृत्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश व प्रान्तीय नशाबंदी परिषद् हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या, संयोजक बहन प्रवेश आर्या कर रहे थे।
स्वामी आर्यवेश जी ने केन्द्र सरकार से देश में पूर्ण शराब बंदी लागू करने की माँग की। उन्होंने प्रधानमन्त्री से शराब बंदी की राष्ट्रीय नीति बनाने की भी बात कही। स्वामी जी ने कहा कि जब गुजरात व बिहार में शराब बंद हो सकती है तो पूरे देश में क्यों नही हो सकती।
यात्रा में आर्य समाज के संन्यासी, बेटी बचाओ अभियान व आर्य समाज के कार्यकर्त्ता साथ चल रहे थे। - दीक्षेन्द्र आर्य

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी सम्मानित

आर्य समाज, सान्ताक्रूज मुम्बई के ७४ वें वार्षिकोत्सव के सुअवसर पर आर्य जगत् के विद्वानों को पुरस्कृत किए जाने की शृंखला में प्रख्यात वैदिक विद्वान् आचार्य वेदप्रकाश जी श्रोत्रिय को वेदांग पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जिसमें

प्रशस्ति पत्र, नारियल के अतिरिक्त साठ हजार रु. की राशि सेवार्पित की गई। इसके अतिरिक्त आचार्य सत्यजित् जी रोजड़ को स्व. नारायणदास हासानन्दानी विशिष्ठ वेदांग पुरस्कार (चालीस हजार रु.) एवं डॉ. विनोद चन्द्र विद्यालंकार को मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार (चालीस हजार रु.) से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई के प्रधान बाबू मिठाई लाल सिंह जी, महामंत्री श्री अरुण अब्रोल जी एवं आचार्य सोमदेव जी उपस्थित थे।

अग्निहोत्र प्रशिक्षण शिविर निरन्तर चल रहा है

आर्य समाज मन्दिर बसई (गुरुग्राम) में सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास, पानीपत के तत्वावधान में दिनांक १ अक्टूबर २०१७ से 'अग्निहोत्र प्रशिक्षण' चल रहा है। प्रशिक्षण स्व. आचार्य ज्ञानेश्वर जी के निर्देशन में प्रारम्भ हुआ था तथा पं. भरतलाल शास्त्री के ब्रह्मत्व में ३० दिसम्बर २०१८ तक चलेगा। आयोजक महात्मा वेदपाल आर्य के अनुसार प्रमुख यज्ञवेदी में सूर्योदय से सूर्यास्त तक प्रतिदिन यज्ञ होता है। इस अभूतपूर्व यज्ञ-प्रशिक्षण के मुख्य यजमान न्यू इण्डिया कंट्रेक्टर एण्ड डेवलपर्स, चण्डीगढ़ के एमडी श्री शिवपाल चौधरी हैं। सम्पर्क- ९८११२०६२३०

वैदिक प्रतियोगिता पुरस्कार समारोह

आर्य समाज मंदिर, महर्षि पाणिनि नगर के तत्वावधान में वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता पुरस्कार समारोह ईम्मानुइल मिशन विद्यालय, श्री सुमेर उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं जे. बी. एम. स्कूल में आयोजित किया गया। सेवाराम आर्य, हेम सिंह आर्य, बलवीर सिंह सी.ए., अभिषेक टाक, कुशजीत, मदन सिंह तंवर, विक्रम सिंह सांखला, श्रीमती

रचना टाक, संतोष आर्या, रजनी तंवर, राजश्री कच्छवाहा द्वारा विद्यार्थियों को स्मृति चिह्न व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। यह परीक्षा, भारतीय संस्कृति व नैतिक शिक्षा की जानकारी हेतु बच्चों को ज्ञान प्राप्त हो इस उद्देश्य से आर्य समाज विद्यालयों में जाकर परीक्षा के द्वारा बच्चों को राष्ट्र के प्रति जागरुक कर रहा है। - कैलाश चन्द्र आर्य

७६ वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

श्री वैदिक कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, आबूरोड का ७६वां वार्षिकोत्सव दिनांक १६ जनवरी से २१ जनवरी २०१८ तक सोत्साह मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय की छात्राओं द्वारा 'बाल कवि सम्मेलन' के आयोजन के साथ नयनाभिराम तथा प्रेरक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। - मोतीलाल आर्य, प्रधान, आर्य समाज, आबूरोड

आर्य समाज गाँधीधाम का ६४वाँ अधिवेशन सम्पन्न

आर्य समाज, गाँधीधाम का ६४वाँ वार्षिक अधिवेशन दिनांक १२ से १४ जनवरी २०१८ तक बड़े हर्षोल्लास सहित सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी की आचार्या नन्दिता जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में आत्म कल्याण महायज्ञ हुआ। इस कार्यक्रम में

गुजरात के विविध क्षेत्रों व राजस्थान, पंजाब, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र और अमेरिका से सैंकड़ों प्रतिनिधि पधारे। ओ३म् ध्वजारोहण अमेरिका से पधारे श्री गिरीश खोसला एवं श्री विश्रुत आर्य के करकमलों द्वारा हुआ। इस अवसर पर नगर में भव्य शोभायात्रा भी निकाली गई। आर्य प्रतिनिधि सभा, अमेरिका के संस्थापक व जीवनप्रभात के कुलपति आर्य पथिक वानप्रस्थी श्री गिरीश खोसला के ७१वें जन्मदिवस पर उनका सार्वजनिक अभिनन्दन एवं उनकी पुस्तक का विमोचन किया गया।

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में २६ से २८ जनवरी २०१८ में रामलीला मैदान, अशोक विहार-४, दिल्ली में २५१ कुण्डीय विराट यज्ञ के साथ अखिल भारतीय आर्यमहासम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस भव्य कार्यक्रम में आचार्य अखिलेश्वर जी, श्री सुरेन्द्र मानकटाला, डॉ. आनन्द कुमार, श्री भुवनेश खोसला, आचार्य वीरेन्द्र विक्रम, ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र, स्वामी सुमेधानन्द जी (सांसद), डॉ. निष्ठा विद्यालंकार, ठाकुर विक्रम सिंह जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी, श्री आनन्द चौहान, डॉ. महेश विद्यालंकार जैसे मनीषियों ने भाग लेकर कार्यक्रम की शोभा में अभिवृद्धि की। - अनिल आर्य, राष्ट्रीय संयोजक

वैदिक मिशन, मुम्बई के द्वारा संगोष्ठी

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से वैदिक मिशन मुम्बई के तत्वावधान में दिनांक २४-२५ मार्च २०१८ को स्वामी प्रणवानन्द जी, दिल्ली की अध्यक्षता में आर्य समाज सान्ताक्रुज, मुम्बई में 'वेदों में शिक्षा विज्ञान' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। जिसमें स्वामी आर्यवेश जी, दिल्ली एवं स्वामी धर्मानन्द जी, गुरुकुल आमसेना, विशेष अतिथि रहेंगे। - संदीप आर्य, मंत्री, वैदिक मिशन मुम्बई

गुरु विरजानन्द महाविद्यालय, करतारपुर में प्रवेश प्रारम्भ

कक्षा ६ से ६,११ वीं तथा बी.ए.प्रथम वर्ष में
सम्पूर्ण निःशुल्क शिक्षा आवास एवं भोजन
प्रवेश परीक्षा १५ अप्रैल २०१८
सम्पर्क सूत्र- ०६६८८१६३२३६ (व्हाट्सऐप)। - ध्रुव कुमार मित्तल, प्रधान

खीर पेय उत्सव

नशे के विरोध में आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर द्वारा ३१ दिसम्बर २०१७ को खीर (दूध) पेय उत्सव का आयोजन किया गया तथा नशामुक्त समाज बनाने का संकल्प लिया गया। - प्रदीप आर्य, प्रधान

हर्षोल्लास से मनाया गणतन्त्र दिवस

आर्य समाज, हिरण्मगरी, उदयपुर द्वारा संचालित दयानन्द कन्या विद्यालय में गणतन्त्र दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो.(डॉ.) प्रेमचन्द गुप्त ने ध्वजारोहण किया, समारोह में श्री रामचन्द्र सोनी, बैंक ऑफ बडौदा के उप क्षेत्रीय प्रबंधक श्री एस. के. राठी, लायन्स क्लब 'मेवाड़ गौरव' की श्रीमती रेणु चौधरी, श्रीमती चन्द्रकला चौधरी, श्रीमती कल्पना शर्मा, डॉ. एस. के. भारद्वाज, श्री राम निवास गादिया विशिष्ट अतिथियों के रूप में उपस्थित हुए।

इस अवसर पर विद्यालय की छात्राओं ने देश भक्ति से सराबोर लोकगीत, लोकनृत्य, नृत्य नाटिका, बुलबुल, शारीरिक प्रदर्शन एवं भारतीय गणतन्त्र पर हिन्दी एवं अंग्रेजी में भाषण, आर्य समाज के नियम आदि प्रस्तुतियाँ दीं।

विद्यालय के संरक्षक डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्रीमती शारदा गुप्ता, प्रधान श्री भँवरलाल आर्य एवं श्रीमती ललिता मेहरा ने अतिथियों का स्वागत सम्मान किया। विद्यालय की मानद निदेशक श्रीमती पुष्पा सिन्धी ने विद्यालय की गतिविधियों का परिचय कराया। विद्यालय के मंत्री कृष्ण कुमार सोनी ने अतिथियों का आभार प्रदर्शित किया। कार्यक्रम का संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा द्वारा किया गया। - कृष्ण कुमार सोनी, मंत्री

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के पुरस्कार घोषित
आर्य समाज, शाहपुरा (राज.) को 'सत्यार्थ भूषण' उपाधि

जैसा कि विदित है कि न्यास द्वारा सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के प्रत्येक अंक में सत्यार्थ प्रकाश पर आधारित एक पहेली प्रस्तुत की जाती है। गत १२ अंक के सभी परिणाम प्राप्त होने पर घोषित नीति के अनुसार, सही हल प्रस्तुत करने वाले प्रतिभागियों के चारों समूहों के सही हल भेजने वालों के नामों में से विजेता के चयन के लिए आज न्यास कार्यालय में कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य एवं अन्य स्थानीय न्यासियों की उपस्थिति में न्यास के सहमंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया के हाथों लॉटरी निकलवायी गयी।

तदनुसार निम्न प्रतिभागियों को विजेता घोषित किया गया-

प्रथम- मंत्री, आर्य समाज, शाहपुरा (राज.) (पुरस्कार राशि-5100 तथा 'सत्यार्थ भूषण' उपाधि एवं प्रमाण पत्र)

द्वितीय- श्रीमती किरण आर्य, कोटा (राज.) (पुरस्कार राशि 1100 तथा प्रमाणपत्र)

तृतीय- श्री गोवर्धन लाल झवर, सीहोर (म.प्र.) (पुरस्कार राशि 700 तथा प्रमाण पत्र)

चतुर्थ- श्रीमती सुनीता भदौरिया, ग्वालियर (म.प्र.) (पुरस्कार राशि 500 तथा प्रमाण पत्र)

ध्यातव्य है कि यह योजना 'आर्यरत्न डॉ. ओम प्रकाश (म्यामार)' की स्मृति में न्यास के संरक्षक डॉ. सुखदेव चन्द सोनी जी द्वारा प्रायोजित है। योजना आगामी वर्ष में भी जारी रहेगी तथा इसी प्रकार पुरस्कार दिए जावेंगे। अधिक से अधिक पाठक इसमें भाग लेते रहें ऐसा अनुरोध है।

नोट- जिन्होंने सत्यार्थ प्रकाश पहेली में भाग लेकर १२ सही उत्तर भेजे हैं और विजेता न बन पाये हैं उन्हें प्रमाण-पत्र प्रदान किया जावेगा। - सुरेश चन्द्र पाटोदी , व्यवस्थापक

स्वस्थ सुखी जीवन के कुछ रहस्य

सांस लें- भरपूर गहरा।

प्रार्थना करें- प्रातः सायं दोनों समय, ओ३म् उच्चारण करें, गायत्री गान करें। थोड़ी देर के लिए श्रद्धाभक्ति पूर्वक प्रभु का ध्यान करें।

व्यायाम करें- प्रतिदिन योगासन, प्राणायाम, प्रातःकालीन सैर।

भोजन- (हितभुक्, ऋतुभुक्, मितभुक्) स्वास्थ्यवर्द्धक, मौसम के अनुसार। भूख से थोड़ा कम आहार चबा-चबा कर खायें। दिन में कई बार पानी पीना आवश्यक खुराक है।

स्वाध्याय- प्रतिदिन वेदशास्त्रों में से आध्यात्मिक विचार और महापुरुषों की जीवनी पढ़ने के लिए थोड़ा समय जरूर निकालें। प्रतिदिन अपना अध्ययन करें यानि अपने आप को परखें व सुधारें।

नींद- पूरी लें।

वार्ता- सत्य, मधुर, हितकर एवं अल्प। पहले बात को तोलो फिर मुँह से बोलो।

सदाचार- अपने चरित्र की रक्षा करें। धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया लेकिन अगर चरित्रहीन हुए तो सब कुछ गया।

पहनावा- साफ, सुधरा, शालीन एवं चुस्त।

बोल विचार- आस्तिक एवं सकारात्मक।

कार्य- रोजाना एक शुभ कार्य अवश्य करें। अपने सभी कार्य योजनाबद्ध एवं शांत स्वभाव से करें। समय नष्ट करना जीवन नष्ट करने के समान है।

परिवार- परिवार में स्वर्ग के समान प्रेमपूर्ण शांत वातावरण बनाकर रहें। मनमुटाव होने पर चिल्लाएँ नहीं, मैत्रीभाव से शीघ्र ही समाधान निकाल लें। दिन में दो-चार मिनट के लिए बुजुर्गों के पास बैठकर प्यार से उनसे बातचीत करें। बुजुर्ग लोग भी परिवार के सदस्यों का उचित मार्गदर्शन करें। सारा परिवार प्रतिदिन इकट्ठे मिलकर प्रभु प्रार्थना करे या प्रभु भजन गाये। किसी से भी गलती हो जाने पर नुक्ताचीनी न करें, अकेले में प्यार से समझा दें। परिवार से बढ़कर दुनिया का कोई सम्बन्ध नहीं।

कमाई करें- ईमानदारी से।

खर्चा करें- सोच समझकर।

बचत- बचत अवश्य करें।

त्यागते जाएँ- बुरे विचार, बुरी संगति, दुर्जनों को गिराएँ।

अपनाते जाएँ- अच्छे विचार, अच्छी संगति। सज्जनों को बढ़ायें।

कर्तव्य कर्म- कर्तव्य कर्म निर्भय होकर करें। कर्तव्य न करना अधर्म को, भ्रष्टाचार को बढ़ावा देना है।

जीवन में- जीवन में सादा जीवन उच्च्य विचार रखें। सदा मुस्कराते रहें।

एकाग्रता- अपने लक्ष्य की ओर सुमार्ग पर एकाग्र रहें।

विश्वास- दूसरों पर संभल कर विश्वास रखें। अपने पर भरपूर विश्वास रखें कि आप जो चाहे प्राप्त कर सकते हैं।

सहायता- जरूरतमन्द सुपात्रों की तन-मन-धन से सहायता करें।

व्यवहार- दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करें जैसाकि आप चाहते हैं कि दूसरे आपके साथ करें। माता-पिता, आचार्य, विद्वान् एवं बड़ों के साथ सम्मान भाव से, छोटों के साथ स्नेहभाव से, अपने अधीन यानि नौकरों के साथ दयाभाव से, उन्नति करने वालों के साथ मैत्रीभाव से व्यवहार करें।

बढ़ते जाना- राग द्वेष से बचते हुए प्रेमभावना से सबके साथ मिलकर प्रसन्नतापूर्वक ईशभक्ति व देशभक्ति की दिशा में हरदम बढ़ते जाना।

- डॉ मिगलानी

त्याग में ही जीवन की सफलता है

कथा सरित

महाराष्ट्र के किसी गाँव में एक निर्धन परिवार रहता था। गृह का स्वामी निर्धन होने के साथ-साथ लोभी भी था। उसका युवा विवाहित पुत्र अस्वस्थ हो गया। रोग की चिकित्सा कराई किन्तु वह असाध्य हो गया। उसके जीवित रहने की आशंका बढ़ने लगी। एक दिन एक फकीर उधर से गुजरा। उसने रोगी को देखकर कहा- 'यदि तुम एक हजार अशर्फियाँ मुझे दे दो तो मैं तुम्हारे पुत्र को स्वस्थ कर सकता हूँ।' निर्धन फकीर की बात सुनकर सन्न रह गया। उसने तो एक हजार अशर्फी देखी भी नहीं। निर्धन एक हजार अशर्फियाँ कहाँ से लाये? वह चिन्ता के सागर में डूबने लगा।

उस समय औरंगजेब का क्रूर दमन चक्र तेजी से चल रहा था। उसी समय महाराष्ट्र केसरी शिवाजी औरंगजेब के कारागार से निकले और घूमते हुए उसी गाँव के एक मन्दिर में आकर ठहरे। औरंगजेब ने यह आज्ञा निकाली कि जो कोई शिवाजी को पकड़ कर हमारे हवाले करेगा उसे मुँह माँगी अशर्फियाँ इनाम में देंगे। गृहस्वामी लोभी था ही उधर संकट में भी पड़ा था। उसे अपने पुत्र की चिकित्सा के लिये फकीर के निर्देशानुसार एक हजार अशर्फियों की आवश्यकता भी थी। उसके मन में पाप आ गया। उसे किसी तरह यह मालूम पड़ गया था कि शिवाजी मेरे गाँव के बाहर बने मंदिर में ठहरे हुए हैं। उसने शिवाजी की सूचना औरंगजेब को देकर अपने रुग्ण पुत्र की चिकित्सा हेतु एक हजार अशर्फियाँ प्राप्त करने का निश्चय कर लिया। जब घरवालों को गृहस्वामी के मन की बात मालूम हुई तो सबने समझाया कि ऐसे महापुरुष को दुष्ट औरंगजेब के हवाले नहीं करना चाहिए, किन्तु गृहस्वामी ने किसी की एक न सुनी और प्रातःकाल होते ही औरंगजेब के पास जाने का निश्चय कर लिया।

निर्धन की पुत्रवधु अर्थात् रोगी की पत्नी बुद्धिमती तथा राष्ट्रहित चिन्तक थी। उसके मन में देश, जाति, धर्म के प्रति बड़ा प्रेम था। उसने सब बातें सुन लीं। उससे राष्ट्र का यह द्रोह सहन नहीं हो सका। अतः उसने अपना निर्णय कर लिया और उसके अनुसार वह घनघोर अंधेरी रात में घर से चुपचाप निकल कर बाहर मंदिर की ओर चल पड़ी, जहाँ शिवाजी ठहरे थे। मंदिर में पहुँचते ही उसकी आहट से शिवाजी सतर्क हुए। उन्होंने डांटकर पूछा- 'कौन है?' तत्काल तरुणी उनके सामने आई तो वे चकित हुए और उन्होंने विस्मय से पूछा- 'बेटी यहाँ इस समय क्यों आई हो?' युवती ने कहा- 'महाराज आप तुरन्त इस गाँव से चले जायें।' शिवाजी ने पूछा- 'क्यो?' तब युवती ने प्रारम्भ से अन्त तक की सब बात कह दी और बताया कि उसका श्वसुर सुबह ही बादशाह को आपके यहाँ होने की सूचना देने चला जायेगा।

सब बात सुनकर शिवाजी को बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह स्त्री अपने पति की मृत्यु की चिन्ता न कर मुझे क्यों बचाना चाहती है? उन्होंने पूछा- 'बेटी तुम अपने पति की चिन्ता क्यों नहीं कर रही हो? तुम्हें अपने विधवा होने की कोई चिन्ता क्यों नहीं सता रही?' उस देवी ने कहा- 'महाराज आज आप ही राष्ट्र के कर्णधार हैं। यदि आप नहीं रहे तो राष्ट्र में लाखों नारियाँ विधवा हो जायेंगी। ऐसे तो मैं भी विधवा होऊँगी। मुझे पति से प्रेम है पर राष्ट्र को जीवन दान मिले तो मेरे लिए यह और अधिक गौरव की बात होगी। त्याग, उत्सर्ग में ही जीवन की सफलता है।'

शिवाजी युवती की राष्ट्रभक्ति को देखकर गद्गद् हो गये वह उसी क्षण वहाँ से चले गये। युवती अपने घर वापस चली गई किन्तु शीघ्र ही युवती के घर एक हजार अशर्फियाँ पहुँच गईं। गृहपति ने उन्हें फकीर को दे दिया। १०-१२ दिन में उसका पति अच्छा हो गया। पति ने पूछा इन अशर्फियों की व्यवस्था कहाँ से की? पत्नी ने शिवाजी की दया और सब विवरण पति को बता दिया। पत्नी की बात सुनकर युवक शिवाजी का सहयोगी और पूर्ण राष्ट्रभक्त बन गया।

धन्य थी भारत की वह महिला जिसने अपने पति की चिन्ता न की, अपितु राष्ट्र के हित के लिए अपने पति को छोड़ने के लिए उद्यत हो गई। उसका अनुपम त्याग इतिहास में अमर रहेगा।

साभार- हितोपदेशक

ईश्वर सिद्धि

ईश्वर आँखों से नहीं दिखता

वस्तुमात्रं तु यद्दृश्यं संसारे त्रिगुणं हि तत्॥६९॥
दृश्यं च निर्गुणं लोके न भूतं नो भविष्यति।
निर्गुणः परमात्माऽसौ न तु दृश्यः कदाचन॥७०॥ – दे. भा. स्कं.३/अ.६

संसार में जितनी चीजें आँखों से दिखाई देती हैं वे सब त्रिगुणात्मक हैं। ये तीनों गुण प्रकृति के हैं परमात्मा के नहीं। वह तो निर्गुण है अतः कभी भी आँख से दिखाई नहीं देता।

जो पृथ्वी, उसका आत्मायुक्त मन से प्रत्यक्ष किया जाता है वैसे इस प्रत्यक्ष होने से परमेश्वर का भी प्रत्यक्ष है।' हमारे विचार में ऋषि स्पष्ट ईश्वर प्रत्यक्ष मानते हैं।

न्यायदर्शनकार ने आठ प्रमाणों को मान्यता दी है जिनमें एक अनुमान प्रमाण है। लोक में व्यवहृत 'अनुमान' शब्द से ऐसा प्रतीत होता है कि 'अनुमान' अत्यन्त साधारण कोटि का तर्कविहीन प्रमाण है। परन्तु ऐसा नहीं है। अनुमान प्रमाण को किसी भी प्रकार कम करके नहीं आंका जा सकता। क्योंकि अनुमान वहीं होता है जहाँ पूर्व में प्रत्यक्ष कार्य-कारण शृंखला का ही एक घटक होने से दूसरे का निश्चय अनुमान प्रमाण द्वारा किया जाता है। उदाहरण के तौर पर हम लोक में देखते आते हैं कि माता-पिता के संयोग से पुत्र-पुत्री उत्पन्न होते हैं। अतः किसी पुत्र अथवा पुत्री को देखकर अनुमान प्रमाण के अन्तर्गत यह निश्चय से कहा जा सकता है कि इनके माता-पिता भी निश्चित होंगे, फिर चाहे हमने उनके माता-पिता के दर्शन न किए हों। इसी प्रकार अग्नि व धुंऐं का साहचर्य जग प्रसिद्ध है अतः कालान्तर में धुंऐं को देखकर अग्नि का अनुमान किया जाता है।

इसी प्रकार लोक में आप किसी भी कृति को देखिये। हमें पता है कि उसका कर्त्ता अवश्य होता है। मिट्टी का घड़ा कुम्हार द्वारा, आभूषण सुनार द्वारा, वस्त्र बुनकर व मूर्ति शिल्पकार द्वारा बनायी जाती है यह हमें प्रत्यक्ष है। कभी हम किसी कारणवश सुनसान उजाड़ जंगल पहुँच जावें और वहाँ एक आभूषण हमें पड़ा दिखे तो चाहे उस बियावान जंगल में मनुष्य के पहुँचने की संभावना कितनी भी क्षीण हो हम यह अनुमान लगाने में एक क्षण की देर नहीं लगाते कि यह आभूषण किसी सुनार ने बनाया है उससे किसी मनुष्य ने खरीदा होगा और वह किसी कारणवश इस जंगल में आया होगा और आभूषण यहाँ गिर गया होगा। अनुमानों की इस शृंखला में क्या हम एक भी क्षण को यह सोचते हैं कि यह आभूषण जमीन के अन्दर अपने आप बनकर जमीन फोड़कर निकल आया है? कदापि नहीं। ऐसा क्यों? क्योंकि संसार में कार्य-कारण की शृंखला प्रत्यक्ष है। यह प्रत्यक्ष है कि कारण के बिना कार्य नहीं हो सकता। रचना है तो रचनाकार का होना आवश्यक है। इस सन्दर्भ में लगाया गया अनुमान किसी प्रत्यक्ष से कम नहीं होता। सच बात यह है कि लोक में अनगढ़ से अनगढ़ रचना को भी हम अकस्मात् हुई नहीं मानते।

ईश्वर-प्रत्यक्ष-आत्मा में- जिस किसी पुरुष को परमेश्वर को जानने की इच्छा हो वह योगाभ्यास करके अपने आत्मा में उसे देख सकता है अन्यत्र नहीं। (यजु. ७/४२ के महर्षि दयानन्द कृत भाष्य से)

कागज पर दो तीन रंगो की आड़ी तिरछी लाइनों को देख हम कभी भी यह स्वीकार नहीं करते कि अपने आप दो तीन तरह के रंग आकर मिल गये होंगे परन्तु जब आश्चर्यजनक कारीगरी, अटूट नियमों से युक्त महानतम रचना इस सृष्टि को देखते हैं तो हममें से अनेक इसके रचियता के अस्तित्व को मानने में संकोच कर नाना प्रकार के कुतर्कों का आश्रय लेते हैं। ऐसी मानसिकता को उचित कदापि नहीं कहा जा सकता।

कृपया निम्न दृष्टान्तों पर विचार करें

भूगर्भ शास्त्रियों को जमीन की पर्तों के मध्य एक सिला हुआ जूता मिला जिसकी आयु उन्होंने साठ हजार वर्ष के लगभग निश्चित की। इन वैज्ञानिकों ने बिना एक क्षण भी यह विचारे कि यह जूता अपने आप बन गया होगा इसे स्वभावतः ही मानव निर्मित मान साठ हजार वर्ष पुरानी सभ्यता की व्याख्या का प्रयास किया। जब साठ हजार वर्ष पुराने जूते के निर्माता के बारे में जिसे किसी ने देखा नहीं, कोई संदेह न कर निश्चयात्मक अनुमान किया जा सकता है तो सृष्टिकर्त्ता परमात्मा के बारे में यह कहकर कि उसे किसी ने देखा नहीं क्योंकर संदेह करना चाहिए?

– अशोक आर्य

Dollar

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 March-2018 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर